मूल्य १०/-

मान मन्दिर बरसाना

मासिक पत्रिका, श्रावण-भाद्रपद, श्रीकृष्ण सं.५२५०, वि.सं. २०८१ (अगस्त २०२४ ई.), वर्ष ०८, अंक ०८

विशेष :-

श्रीकृष्ण जन्मलीला

बाबाश्री से सम्बन्धित भावोद्गार

श्रीमाताजी गौशाला में मनाये गए गुरुपूर्णिमा-महोत्सव की झलकियाँ

अनुक्रमणिका

	विषय- सूची	पृष्ठ- संख्या
१	व्यापक व विभु 'श्रीकृष्णलीला'	०५
२	कृष्ण की विवाहोत्कण्ठा	०९
३	'वृन्दावन' के ही अन्तर्गत 'बरसाना'	११
४	वास्तविक विद्यार्थी 'बाबाश्री'	१३
५	अप्रतिम प्रतिभाशाली 'बाबाश्री'	१६
६	कथा-कीर्तन के चमत्कार	२१
७	परम मंगलमय 'संत-संकल्प'	२४
८	सच्चे संत का आत्मिक प्रेम	२७
९	ब्रजप्रेम-प्रदर्शक 'बाबाश्री'	३०
१०	गुरु-पूर्णिमा-महोत्सव २०२४	३३

|| राधे किशोरी दया करो ||

हमसे दीन न कोई जग में,
बान दया की तनक ढरो ।
सदा ढरी दीनन पै श्यामा,
यह विश्वास जो मनहि खरो ।
विषम विषयविष ज्वालमाल में,
विविध ताप तापनि जु जरो ।
दीनन हित अवतरी जगत में,
दीनपालिनी हिय विचरो ।
दास तुम्हारो आस और की,
हरो विमुख गति को झगरो ।
कबहूँ तो करुणा करोगी श्यामा,
यही आस ते द्वार पर्‌यो ।

— *पूज्यश्री बाबामहाराज कृत*

INSTAAL करें ---
PLAY STORE से-----

MANINI APP

बाबाश्री के सत्संग/कीर्तन/भजन, साहित्य, आदि यहाँ से FREE - DOWNLOAD कर सकते हैं व सुन सकते हैं ।

परम पूज्यश्री रमेश बाबा महाराज जी द्वारा सम्पूर्ण भारत को आह्वान –

"मजदूर से राष्ट्रपति और झोंपड़ी से महल तक रहने वाला प्रत्येक भारतवासी विश्वकल्याण के लिए गौ-सेवा-यज्ञ में भाग ले ।"

*** योजना ***

अपनी आय से १ रुपया प्रति व्यक्ति प्रतिदिन निकालें व मासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक अथवा वार्षिक रूप से इकट्ठा किया हुआ सेवाद्रव्य किसी विश्वसनीय गौसेवा प्रकल्प को दान कर गौरक्षा कार्य में सहभागी बन अनन्त पुण्य का लाभ लें । हिन्दूशास्त्रों में अंशमात्र गौसेवा की भी बड़ी महिमा का वर्णन किया गया है ।

श्रीमानमंदिर की वेबसाइट www.maanmandir.org के द्वारा आप प्रातःकालीन सत्संग का ८.०० से ९:०० बजे तक तथा संध्याकालीन संगीतमयी आराधना का सायं ६:०० से ८:०० बजे तक प्रतिदिन लाइव प्रसारण देख सकते हैं ।

संरक्षक- **श्रीराधामानबिहारीलाल** , प्रकाशक – **राधाकान्त शास्त्री, मानमंदिर , गह्वरवन, बरसाना, मथुरा** (उ.प्र.)

mob. **राधाकांत शास्त्री** .....9927338666, Website :www.maanmandir.org , (E-mail :info@maanmandir.org)

विशेष:- इस पत्रिका को स्वयं पढ़ने के बाद अधिकाधिक लोगों को पढ़ावें जिससे आप पुण्यभाक् बनें और भगवद्-कृपा के पात्र बनें । हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है – **सर्वे वेदाश्च यज्ञाश्च तपो दानानि चानघ । जीवाभयप्रदानस्य न कुर्वीरन् कलामपि ।।** (श्रीमद्भागवत३/७/४१)
अर्थ:- भगवत्तत्त्वके उपदेश द्वारा जीव को जन्म-मृत्यु से छुड़ाकर उसे अभय कर देने में जो पुण्य होता है, समस्त वेदों के अध्ययन, यज्ञ, तपस्या और दानादि से होनेवाला पुण्य उस पुण्य के सोलहवें अंश के बराबर भी नहीं हो सकता ।

प्रकाशकीय

'कृष्ण' का अर्थ है, जो सबको अपनी ओर खींचे, 'कृष्' धातु माने खींचना, क्या खींचते हैं ? जितने भी उनके अवतार हैं, सबकी मधुरता उन्होंने इकट्ठा की; वे माखन खायेंगे तो माखन कैसे बनता है ? सारा दही एकत्रित करके उसे मथा जाता है, मथने पर उसमें से माखन निकलता है; वैसे ही श्रीजीवगोस्वामीजी कहते हैं कि अब तक 'कृष्ण' के जितने भी अवतार हुए, उन्होंने सबकी मधुरता एक साथ खींचकर मिलाया व माखन बना करके 'कृष्ण' बन गये और माखन खाने लग गये, इसलिए उनका नाम कृष्ण है । श्रीकृष्ण का चरित्र तीन प्रकार के लोग गाते हैं –

निवृत्ततर्षैरुपगीयमानाद् भवौषधाच्छ्रोत्रमनोऽभिरामात् ।
क उत्तमश्लोकगुणानुवादात् पुमान् विरज्येत विना पशुघ्नात् ॥ (श्रीभागवतजी - १०/१/४)

एक तो आत्माराम जीवन्मुक्त महापुरुष श्रीकृष्ण-यश का गान करते हैं । दूसरे 'मुमुक्षु जन' जो भवसागर से पार होना चाहते हैं, वे भी श्रीकृष्ण-गुणगान करते हैं । तीसरे 'विषयी लोग' (जैसे आजकल सिनेमा के गायक-गायिकायें) भी श्रीकृष्ण चरित्र को गाते हैं । श्रीकृष्ण का गुणगान किसी भी प्रकार से किया जाए, उससे मनुष्य का कल्याण ही होता है । श्रीभक्ति पथ पर चलने वालों को कभी भी संसार का दुःख नहीं भोगना पड़ता है । कुमार अवस्था से ही मनुष्य को भक्ति करना चाहिये क्योंकि मनुष्य शरीर अत्यन्त ही दुर्लभ है । भगवत्कृपा से यह शरीर मिला है, भगवान् से मिलना ही इस शरीर की सार्थकता है ।

कौमार आचरेत्प्राज्ञो धर्मान् भागवतानिह । दुर्लभं मानुषं जन्म तदप्यध्रुवमर्थदम् ॥ (श्रीभागवतजी ७/६/१)

बाल्यावस्था में जो संस्कार पड़ते हैं, उनमें दृढ़ता होती है । कपिल भगवान् ने अपनी माता देवहूति से कहा कि जैसे-जैसे शरीर बढ़ता है, वैसे-वैसे ही अहंता भी बढ़ती जाती है, शोक और क्रोध भी बढ़ते हैं, जिनके कारण भक्ति में बाधा आती है । बड़ा होने पर अनेक प्रकार की कामनाएँ घेर लेती हैं, उनमें फँसने पर सम्पूर्ण जीवन का नाश हो जाता है –

सह देहेन मानेन वर्धमानेन मन्युना । करोति विग्रहं कामी कामिष्वन्ताय चात्मनः ॥ (श्रीभागवतजी ३/३१/२९)

विशेष रूप से स्त्रीसंग मिलने पर बन्धन इतना प्रबल हो जाता है कि फिर उससे बाहर निकलना असम्भव हो जाता है, यही कारण है कि भजन कुमारावस्था से ही करना चाहिए । भक्तियोग पर आरुढ़ होने वाले साधकों को प्रमदाओं का संग नहीं करना चाहिए । इन्हें नरक का खुला द्वार कहा गया है – **सङ्गं न कुर्यात्प्रमदासु जातु योगस्य पारं परमारुरुक्षः ।**
मत्सेवया प्रतिलब्धात्मलाभो वदन्ति या निरयद्वारमस्य ॥ (श्रीभागवतजी ३/३१/३९)

स्त्री-संगियों का संग करोगे तो तुम निश्चय ही केवल शिश्नोदर के पालन में ही लगे रहोगे । श्रीभगवान् उद्धवजी से कहते हैं – **न तथास्य भवेत् क्लेशो बन्धश्चान्यप्रसङ्गतः । योषित्सङ्गाद् यथा पुंसो यथा तत्सङ्गिसङ्गतः ॥** (श्रीभागवतजी ११/१४/३०)

मोहान्ध स्त्री चाहे युवा हो अथवा वृद्धा, वे सदा ही आसक्तिपरक बातें ही करती हैं, राग-द्वेष उनके हृदय में बना ही रहता है, वे पूर्वानुभूत काम-क्रोध का ही प्रशिक्षण देती रहती हैं; इसीलिए वे सतत् भगवत्परायण नहीं हो पाती हैं । श्रीकृष्ण की लीलाओं का श्रवण-चिन्तन व गुणगान करने से अनादिकाल की अविद्या का मैल साफ हो जाता है तथा विशुद्ध भावमयी भक्ति की प्राप्ति हो जाती है ।

प्रबन्धक
राधाकान्त शास्त्री
श्रीमानमन्दिर सेवा संस्थान

व्यापक व विभु 'श्रीकृष्णलीला'

जन्माद्यस्य यतोऽन्वयादितरतश्चार्थेष्वभिज्ञः स्वराट् तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवये मुह्यन्ति यत्सूरयः ।
तेजोवारिमृदां यथा विनिमयो यत्र त्रिसर्गोऽमृषा धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकं सत्यं परं धीमहि ॥ (श्रीभागवतजी १/१/१)

प्रस्तुत श्लोक में श्रीवेदव्यासजीमहाराज ने परतत्त्व का वर्णन किया है । जिन प्रभु से सृष्टि का जन्म, पालन और संहार होता है, अन्वय और व्यतिरेक दोनों पद्धतियों से जो सभी पदार्थों में अनुगत हैं, स्वराट् हैं, जिनकी स्वतंत्र सत्ता है, जिन्होंने संकल्प मात्र से ही ब्रह्माजी को ज्ञान दे दिया, जिस ज्ञान के सम्बन्ध में बड़े-बड़े देवता भी मोहित हो जाते हैं । जल में मिट्टी, मिट्टी में जल, जल में सूर्य-रश्मियों का, सूर्य-रश्मियों में जल का जहाँ भ्रम हो जाता है, अपने प्रभाव से जो माया को निरस्त किये रहते हैं, ऐसे सत्यस्वरूप भगवान् का हम ध्यान करते हैं ।

इस श्लोक में ब्रह्म के लक्षण बताये गये हैं, लक्षण दो प्रकार के होते हैं – पहला स्वरूप लक्षण और दूसरा तटस्थ लक्षण । जैसे – कोई लड़का है तो उसका स्वरूप लक्षण यह है कि उसके आँख, नाक, कान आदि शरीर के अंग कैसे हैं, रंग गोरा है कि काला है, शरीर पुष्ट है कि विकलांग है । तटस्थ लक्षण यह है कि उस लड़के को संगीत का ज्ञान है, पढ़ा-लिखा है । तटस्थ लक्षण में यह भी है कि लड़का चोरी भी करता है । इसी प्रकार उपरोक्त श्लोक में ब्रह्म के तटस्थ एवं स्वरूप लक्षण बताये गये हैं । ब्रह्म का स्वरूप लक्षण श्लोक के अन्तिम चरण में बताया गया है, वह केवल इतना ही है – **'सत्यं परं धीमहि ।'** ब्रह्म का स्वरूप लक्षण है – जो परम सत्य है, वही ब्रह्म है । तटस्थ लक्षण है – **'जन्माद्यस्य यतोऽन्वयादितरतः ।'** उसके द्वारा सृष्टि की रचना, पालन और संहार होता है । **'तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवये'** – 'आदिकवि' का अर्थ है - ब्रह्माजी, 'ब्रह्म' का अर्थ है – वेद, उसने आदिकवि ब्रह्माजी को वेद का ज्ञान प्रदान किया । यह तटस्थ लक्षण है । **चार्थेष्वभिज्ञः** – सभी पदार्थों में वह ज्ञानरूप है । अभिज्ञ का अर्थ है ज्ञानरूप । **जन्माद्यस्य** – जन्मादि – संसार का जन्म, पालन और प्रलय, **यतोऽन्वयादि** – अन्वय और व्यतिरेक दोनों ही प्रकार से ब्रह्म से ही होता है । ब्रह्म है तो संसार का जन्म होगा, नहीं है तो नहीं होगा । ब्रह्म है तो संसार का पालन होगा, अन्यथा नहीं होगा । इस प्रकार संसार का जन्म, पालन और प्रलय (संहार), ये तीनों अन्वय और व्यतिरेक विधि से ब्रह्म में ही होते हैं । यह सब तटस्थ लक्षण है, जैसे तैत्तरीय श्रुति में बताया गया है कि ब्रह्म क्या है ? यह बड़ी प्रसिद्ध श्रुति है और अद्वैतवादियों के पास इसका कोई उत्तर नहीं है । तैत्तरीय श्रुति में ब्रह्म का लक्षण लिखा है –

यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति यत् प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तद् ब्रह्मेति विजिज्ञासस्व ।

(तैत्तिरीयोपनिषद् - ३/१)

यतो माने जहाँ से । इसका मतलब है कि ब्रह्म से ही सारा संसार उत्पन्न हुआ है, अतः इस संसार को पूर्णतया मिथ्या कैसे कहा जा सकता है, जैसा कि अद्वैतवादी दार्शनिक कहा करते हैं । यह संसार है, केवल रज्जु में सर्प की भाँति भ्रम नहीं है । यतः माने भगवान् से, जिस ब्रह्म से (इसमें पञ्चमी विभक्ति है) । इस बात का उत्तर अद्वैतवादियों के पास नहीं है । यह संसार ब्रह्म से निकला है । सीप में चाँदी की तरह यह भ्रम नहीं है । संसार का अस्तित्व है । यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते – अनन्त प्राणी उसी ब्रह्म से उत्पन्न होते हैं । **जन्माद्यस्य यतोऽन्वयादि** – (भा १/१/१) की यह प्रथम पंक्ति तैत्तरीय श्रुति का सार है । **यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते** – जिस ब्रह्म से अनन्त प्राणी उत्पन्न होते हैं तथा **येन जातानि जीवन्ति** – जिसके द्वारा सब जी रहे हैं । जातानि – पैदा होने के बाद, येन जीवन्ति – उसके द्वारा जी रहे हैं । कोई कहे कि हम अन्न खाते हैं, इसलिए जी रहे हैं । जल पीते हैं, इसलिए जी रहे हैं तो ऐसा नहीं है । किसी मरणासन्न व्यक्ति को रोटी खिलायी जाए तो क्या वह जी जायेगा ? इसलिए यह भ्रम है । न तो कोई अन्न से जीवित है, न जल द्वारा जीवित है और न ही औषधि के सेवन से जीवित है । येन जातानि जीवन्ति – जिसके द्वारा संसार में जीवन है । इस बात को भगवान् ने गीता में कहा है – **जीवनं सर्वभूतेषु** – सम्पूर्ण भूतों में उनका जीवन मैं हूँ । अन्न जीवन नहीं है । जल जीवन नहीं है ।

यह व्याख्या (भा १/१/१) **जन्माद्यस्य** के सन्दर्भ में है । आदि से मतलब पालन एवं संहार । तैत्तरीय श्रुति कहती है – 'यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते' – जन्म । आदि माने पालन, येन जातानि जीवन्ति – पालन, जिसके द्वारा जी रहे हैं । आदि का मतलब प्रलय (संहार), 'यत् प्रयन्ति' – जिसमें लीन हो गये, प्रलय हो गयी । 'यत् प्रयन्ति अभिसंविशन्ति', प्रलय के बाद वहीं पर 'संविशन्ति' सब सोते हैं, स्थिर रहते हैं । इसका अभिप्राय है कि संसार है जब यह पैदा हुआ है और अद्वैतवादी कहते हैं कि संसार भ्रममात्र है । संसार पैदा हुआ है और उसी (ब्रह्म) के द्वारा पालित-पोषित हो रहा है तथा उसी में लीन होता है । लीन होने के बाद महाप्रलय में उसी (ब्रह्म) में रुकता है, मिट नहीं जाता है । 'तद् ब्रह्मेति विजिज्ञासस्व' उसी को ब्रह्म समझो । वही ब्रह्म है । तैत्तरीय श्रुति में इस प्रकार यह जो ब्रह्म का तटस्थ लक्षण बताया गया है, ब्रह्म का यही तटस्थ लक्षण ही (भा.१/१/१) में प्रथम पंक्ति से लेकर साढ़े तीन पंक्ति तक वर्णित किया गया है –

'जन्माद्यस्य यतोऽन्वयादितरतश्चार्थेष्वभिज्ञः' – अन्वय-व्यतिरेक से जन्म, पालन और प्रलय ब्रह्म में सिद्ध होता है एवं इन पदार्थों में वह ज्ञानरूप ब्रह्म है । पदार्थेष्वभिज्ञः – वह सदा ज्ञान रूप है । ऐसा नहीं कि अन्धकार आ जाये । ज्ञान कहाँ से आता है ? स्वराट् – स्वेनैव राजते, ब्रह्म को बाहर से प्रकाश की आवश्यकता नहीं है, वह स्वतः प्रकाश है । स्वराट् माने स्वतः प्रकाश । संसार की सारी चीजें उसके द्वारा भासित होती हैं –

तमेव भान्तमनुभान्ति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ॥ (कठोपनिषद् - २/२/१५)

सब कर परम प्रकासक जोई । राम अनादि अवधपति सोई ॥ (श्रीरामचरितमानस, बालकाण्ड – ११७)

वह सबका प्रकाशक है अर्थात् स्वयं प्रकाश है । **जन्माद्यस्य... तेने** – जिसने (ब्रह्म ने) ज्ञान दिया, फैलाया, किसको ? **आदिकवये** – आदिकवि ब्रह्मा को, **मुह्यन्ति यत्सूरयः** – जिसके बारे में बड़े-बड़े सूर (विद्वान्) लोग भी मोह को प्राप्त हो जाते हैं अर्थात् उसके वास्तविक तत्त्व को नहीं जान पाते हैं । जैसे श्रीकृष्ण की ब्रज लीला को देखकर ब्रह्माजी को मोह हुआ, इन्द्र तथा वरुण को भी मोह हुआ । राम लीला को देखकर सती और गरुड़ को मोह हुआ । ये सभी सूरि (विद्वान्) हैं, फिर भी मोह को प्राप्त हो जाते हैं और भगवल्लीला को समझ नहीं पाते हैं । यह संसार उसी ब्रह्म (भगवान्) में है, कैसे, **तेजोवारिमृदां यथा विनिमये** – जैसे तेज, जल और मिट्टी का एक दूसरे में विनिमय होता रहता है, भासता रहता है । उदाहरण के लिए तुमने जल में सूर्य का गोला देखा तो सूर्य जल में भासित हुआ अथवा कोई शीशा है, उसमें तुमने सूर्य देखा । वह शीशा मिट्टी है, मिट्टी से बना है । उसमें तेज का संक्रमण हुआ अथवा दूर बालू में प्रतीत होता है कि पानी की लहर दौड़ रही है तो वहाँ मिट्टी में वारि का संक्रमण हो रहा है । इसी तरह सम्पूर्ण प्रकृति में तेज, वारि और मिट्टी का एक दूसरे में विनिमय होता रहता है । '**यत्र त्रिसर्गोऽमृषा**' – त्रिसर्ग के बहुत से अर्थ किये गये हैं जैसे तीनों लोक, जाग्रत-स्वप्न-सुषुप्ति आदि तीनों अवस्थायें । ये अमृषा (सत्य) की तरह दिखायी पड़ रही हैं यद्यपि विनिमय होता रहता है, इनकी शाश्वत सत्ता नहीं है । एक होती है शाश्वत सत्ता जिसे कूटस्थ भी कहते हैं और एक होती है बदलती हुई सत्ता । हर चीज बदल रही है किन्तु चल रही है जैसे नदी की धारा । उस धारा में हर समय नया जल आ रहा है, उसकी कूटस्थ सत्ता नहीं है जैसे पहाड़ की कूटस्थ सत्ता है । इसी प्रकार यह संसार हर समय बदल रहा है किन्तु इसका अस्तित्त्व है । यह कूटस्थ सत्ता की तरह भासित होता है । '**धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकम्**' – वे भगवान् अपने धाम (तेज) से कपट रूपी माया को सदा दूर रखते हैं । '**सत्यं परं धीमहि**' – ऐसे सत्यस्वरूप भगवान् का हम ध्यान करते हैं । यह इस श्लोक का सामान्य अर्थ है किन्तु कुछ आचार्य महापुरुषों ने कहा कि इस श्लोक में सामान्य अर्थ तो निकला परन्तु भागवत रसरूप ग्रन्थ है, उस रसरूप ग्रन्थ का प्रथम श्लोक मंगलाचरण ही ऐसा है कि उसमें ठाकुरजी की कोई लीला का परिस्फुटन तो दिखायी ही नहीं पड़ रहा है, कोई लीला तो दिखायी ही नहीं दे रही है । अतः कुछ आचार्यों ने इस प्रथम श्लोक में ही श्रीठाकुरजी की सम्पूर्ण लीला को सिद्ध करके दिखाया । '**जन्माद्यस्य**' – 'आद्यस्य' अर्थात् अनादि आदि सर्वकारण गोविन्द । जो गोविन्द भगवान् ही इस सृष्टि के आदि पुरुष हैं अर्थात् जब कुछ भी नहीं था, उस प्रलय काल में भी भगवान् ही थे । उन भगवान् का जन्म हुआ, कहाँ जन्म हुआ तो बताया कि घर में जन्म हुआ । किन्तु घर में तो जन्म हुआ नहीं,

जन्म तो हुआ मथुरा में, जेल में तो बोले कि जहाँ गृहिणी होती है उसी को घर कहा जाता है, जहाँ स्त्री रहती है वही घर है । जब वसुदेव जी कंस के कारागार में रहे तो मैया देवकी भी तो उनके साथ में थीं । अतः उस कारागार को ही उनका घर मान लिया गया । इसलिए ठाकुर जी का जन्म उनके घर में हुआ । घर में जन्म हुआ फिर घर के अतिरिक्त वे कहाँ रहे तो कहा – 'अन्वयाद्' वहाँ से भाग गये और गोकुल में जाकर रहे । जन्म लिया मथुरा में और रहे गोकुल में । क्यों ? अर्थेष्वभिज्ञः – सब जानते हैं कि अभी मुझे गोकुल जाना है, ब्रज लीला सिद्ध करनी है, गोपियों से प्रेम करना है, उनके साथ रास लीला करनी है, उसके बाद मथुरा जाकर कंस का वध करना है, फिर आगे द्वारका लीला भी करनी है । सब बात जानते हैं इसलिए जन्म लिया मथुरा में और भागकर गये गोकुल में । कैसे हैं वे प्रभु तो बोले स्वराट् हैं । स्वेषु गोपेषु राजते इति स्वराट् – ग्वालबालों के बीच में बैठते हैं, स्वतन्त्र सत्तावान को स्वराट् कहा गया है । भगवान् की सत्ता से सारा संसार चल रहा है, उन भगवान् की सत्ता क्या है तो बताया कि उनकी कोई सत्ता नहीं है । ये तो स्वतः सिद्ध हैं, सत्तावान हैं, इन्हीं की सत्ता से सब कुछ चल रहा है । प्रश्न हुआ कि जब लीला करते हैं तो स्वयं तो सत्तावान हैं फिर लीला किसके साथ करते हैं, उन गोपी-ग्वालबालों के साथ जिनकी सत्ता नहीं है तो इसका उत्तर है नहीं, भगवान् जब स्वतः सिद्ध हैं तो उनका जो परिकर है चाहे वे गोपियाँ हैं चाहे ग्वालबाल हैं चाहे गायें हैं, वे सब नित्य हैं । स्कन्द पुराणोक्त भागवत माहात्म्य में लिखा है – **'नित्याः सर्वे विहाराद्या'** – भगवान् नित्य हैं और उनका जितना परिकर है चाहे गायें हैं चाहे गोपी-ग्वाल हैं, यशोदा मैया-नन्द बाबा हैं, वह सारा परिकर नित्य है क्योंकि भगवान् आप्तकाम भी इन्हीं गोपी-ग्वालों की सहायता से बने हैं । **'कामास्तु वाञ्छितास्तस्य गावो गोपाश्च गोपिकाः ।'** भगवान् को आप्तकाम कहा गया, वे पूर्णकाम हैं । पूर्णकाम होने पर भी उनके मन में कामना आती है । किसकी कामना आती है तो सबसे पहले गायों की कामना होती है फिर ब्रजगोपियों की कामना, ग्वालबालों की कामना होती है और जब ये सब भगवान् को मिल जाते हैं तब वे आप्तकाम, परिपूर्णकाम बन जाते हैं । जैसे भगवान् स्वराट् हैं, अपनी सत्ता से ही सिद्ध हैं, वैसे ही उनका परिकर भी स्वतः सत्ता सिद्ध है यानी जैसे भगवान् तीनों कालों में रहते हैं, वैसे ही उनकी गायें, गोपी, ग्वाल, माता-पिता आदि परिकर भी सदा बना रहता है । यहाँ तक कि यह ब्रजभूमि भी नित्य है । **'गुणातीतं परं ब्रह्म व्यापकं व्रज उच्यते ।'** कभी इस भूमि का नाश नहीं होता है । वृन्दावन के रसिक महापुरुष व्यास जी ने कहा है – **'माया काल रहित नित नूतन कबहूँ नाहि नसात ।'** ब्रजभूमि कभी नष्ट नहीं होती है । यहाँ तक कि महाप्रलय में भी **'राधा मोहन के निज मन्दिर महाप्रलय नहिं जात ।'** प्रलय का भी इस ब्रजभूमि में प्रवेश नहीं है । इसकी सत्ता नित्य है । इस तरह जैसे भगवान् स्वराट् हैं वैसे ही उनका पूरा परिकर भी स्वराट् है । सब नित्य सिद्ध परिकर है । **'तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवयेमुह्यन्ति यत्सूरयः ।'**

उन भगवान् ने मात्र अपने संकल्प से ही ब्रह्मा जी को ज्ञान दे दिया । ऐसा कभी सुनने में तो नहीं आया कि ब्रह्मा जी भगवान् के पास गये और उनसे ज्ञान प्राप्त किया तो यहाँ कहा गया – तेने ब्रह्म हृदा – संकल्प मात्र से ही भगवान् ने ब्रह्मा जी को ज्ञान प्रदान कर दिया । वहाँ किसी कागज-कलम की आवश्यकता नहीं है कि ब्रह्मा जी पढ़ने के लिए बैठें और भगवान् उन्हें पढ़ायें । उन्हें तो भगवान् के संकल्प मात्र से ही सब ज्ञान हो गया । कैसी लीलायें हैं उनकी ? लीलायें ऐसी हैं कि ज्ञान हो गया तब भी ब्रह्मा जी मोहित हो गये । मुह्यन्ति यत्सूरयः । ब्रह्मा जी मोहित हो गये, ब्रह्मा जी तो क्या, स्वयं दाऊ जी महाराज भी मोहित गये । जिस समय वत्सापहरण लीला हुई, ब्रह्मा जी ने बछड़ों और ग्वालबालों का हरण किया तो श्रीकृष्ण एक वर्ष तक स्वयं ही सारे बछड़े और ग्वालबाल बनकर लीला करते रहे । उस समय दाऊ जी को भी पता नहीं था कि कृष्ण ही ग्वालबाल और बछड़े बने हुए हैं । जब इस लीला के समापन का समय आया तब दाऊ जी को इसका पता लगा, उन्होंने विचार किया कि किसी दैत्य की, देवताओं की माया तो मुझ पर प्रभाव नहीं डाल सकती फिर यह कैसी माया है । जितनी भी गायें हैं, वे अपने नए बछड़े की अपेक्षा पुराने बछड़ों से अधिक प्रेम कर रही हैं, ऐसा क्यों जबकि गाय अपने नए बछड़े से अधिक प्रेम करती है । अन्त में दाऊजी को दिखायी पड़ा कि सारे ग्वालबाल भी चतुर्भुज और सारे बछड़े भी चतुर्भुज । दाऊजी सोचने लगे कि यह कैसी विलक्षण माया है ? कृष्ण एक साल तक

ग्वालबाल बनकर खेलते रहे, बछड़े बनकर गायों का दूध पीते रहे और मुझे बताया भी नहीं । भगवान् की ऐसी विलक्षण लीला हुई जिसने दाऊजी महाराज को भी मोहित कर दिया फिर उसे सामान्य जीव क्या समझेंगे ?

तेजोवारिमृदां यथा विनिमयो यत्र त्रिसर्गोऽमृषा ।

ऐसे इनके विलक्षण कार्य हैं कि पानी में मिट्टी का आभास करा दें और मिट्टी में पानी का आभास करा दें, कैसे ? इसका प्रमाण है वेणुगीत । गोपियाँ कहतीं हैं –

प्रायो बताम्ब विहगा मुनयो वनेऽस्मिन् कृष्णेक्षितं तदुदितं कलवेणुगीतम् । (श्रीभागवतजी - १०/२१/१४)

जब श्यामसुन्दर वेणुध्वनि करते हैं तो बड़े-बड़े ऋषि-मुनि पक्षी बनकर इस ब्रजभूमि के वृक्षों की डालों पर आकर बैठ जाते हैं, कैसे बैठते हैं, बिलकुल मौन समाधि लगा लेते हैं, मौन होकर बैठते हैं । जिन पक्षियों का स्वभाव ही है बोलना, वे बोलना ही भूल जाते हैं । इसी प्रकार **'शावाः स्नुतस्तनपयः कवलाः स्म तस्थु'** – वेणुध्वनि सुनकर बछड़ों की ऐसी स्थिति हो जाती है कि गायों का दूध पीते रहते हैं तो दूध का जो घूँट मुख में है, उसे न तो निगल पाते हैं और न ही उगल पाते हैं । जल का स्वभाव है बहने का, यमुना बहती रहती है किन्तु जब श्रीकृष्ण की वेणु-ध्वनि सुनाई पड़ती है तो **'यमुना जी थकित भई लगी जब करारी ।'** यमुना जी का प्रवाह बंद हो गया, यमुना जी रुक गयीं । पाषाण का धर्म है कठोरता किन्तु जैसे ही श्यामसुन्दर की वेणुध्वनि पर्वत से टकरायी तो उसके पाषाण पिघल-पिघलकर बहने लगे । इस तरह पाषाण का धर्म पानी में आ गया । पानी कठोर हो गया, बहते-बहते रुक गया और पानी का जो धर्म था, वह पाषाण में आ गया, पाषाण का धर्म है कठोरता किन्तु वे पिघलकर बहने लगे । **'यत्र त्रिसर्गोऽमृषा'** ऐसी विलक्षण प्रभु की लीलायें हैं, जो जल में भूमि का व्यत्यय और भूमि में जल का व्यत्यय करा देती हैं । एक-दूसरे का धर्म एक-दूसरे में आ जाता है । उन भगवान् ने त्रैसर्गिक लीलायें की हैं, एक तो गोकुल में लीला की है, दूसरी लीला मथुरा में की है और तीसरी लीला द्वारका में की है । भगवान् की ये जो त्रैसर्गिक लीलायें हैं, ये तीनों लीलायें ही सत्य हैं । कभी भी ऐसा विचार नहीं करना चाहिए कि ब्रज लीला सत्य है तथा अन्य लीलायें मृषा (झूठी) हैं । अमृषा - तीनों सर्ग की लीलायें सत्य हैं चाहे वह ब्रज लीला हो अथवा मथुरा की लीला हो अथवा द्वारका की लीला हो ।

धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकं सत्यं परं धीमहि ।

भगवान् अपने तेज से माया को निरस्त किये रहते हैं अर्थात् भगवद् धाम में माया का प्रवेश नहीं है । जब धाम में माया का प्रवेश नहीं है तो वहाँ रहने वालों को माया कैसे व्याप सकती है ? इसीलिए तो महापुरुषों ने कहा –

वृन्दावन में मंजुल मरिबो । जीवनमुक्त सबै ब्रजवासी, पदरज सों हित करिबो ॥

यहाँ के ब्रजवासियों को, यहाँ के रहने वालों को माया व्याप्त नहीं कर सकती है क्योंकि भगवान् ने धाम में माया को आने ही नहीं दिया । यहाँ साक्षात् प्रभु का वास है और जहाँ भगवान् रहते हैं **'विलज्जमानया यस्य स्थातुमीक्षापथेऽमुया ।'** जहाँ भगवान् रह रहे हैं, वहाँ तो माया खड़ी भी नहीं हो सकती है, डरकर, काँपकर भाग जाती है । प्रभु की नित्य स्थिति है ब्रजभूमि में और जब वे यहाँ नित्य विराजे हुए हैं तो फिर माया का प्रवेश यहाँ होगा भी कैसे ? माया का जब ब्रजभूमि में प्रवेश ही नहीं है इसीलिए तो ब्रजवासी जीवनमुक्त कहे गये हैं । महापुरुषों ने कहा कि ब्रजवासी नित्यमुक्त हैं, इनको माया नहीं बाँध सकती है । अस्तु, भागवत में प्रथम स्कन्ध के प्रथम अध्याय के इस पहले ही श्लोक में सम्पूर्ण कृष्ण लीला को गाया गया है ।

वन आयो आप बनवारी ॥

सिर धरि चंदन खौरि, मोतियन की गलमाला डारी ।
मोर मुकुट पीताम्बर सोहै, कुण्डल की छबि न्यारी ॥
वृन्दावन की कुँज गलीन में, चाल चलत अति प्यारी ।
'चन्द्रसखी' भजु बालकृष्ण छबि, चरणकमल पर बलिहारी ॥

कृष्ण की विवाहोत्कण्ठा

यशोदा मैया अपने बाल गोपाल की माखन चोरी और अन्य नटखट लीलाओं को देखकर प्रेम के रोष में भरकर कहती हैं – लाला ! तू सगाई (विवाह) के लिए बहुत आतुर रहता है किन्तु जैसी तेरी करतूतें हैं, उनके कारण तो तू जीवन भर कुँवारा ही रहेगा ।

कारौ रहैगो तू लला । को करैगो ब्याह इन गुन भयौ अति लै चला ॥

तेरे इन अवगुणों के कारण कोई भी अपनी बेटी का विवाह तुझसे नहीं करेगा ।

इनि गुननि तू ब्याह चाहै अरे कान्हर धूत ।

अरे धूर्त कन्हैया ! ऐसे तो तेरे गुण (अवगुण) हैं और तू चाहता है कि शीघ्र ही मेरा विवाह हो जाए । छल भरे तेरे कृत्यों को देखकर कोई भी भला आदमी अपनी बेटी का सम्बन्ध तेरे साथ नहीं करेगा ।

लायक को सनबन्ध करिहै देखि छल जु सँजूत ।

कन्हैया ने जब देखा कि मैया तो मुझ पर अत्यधिक क्रोधित हो रही है और मेरे विवाह की सम्भावना से ही इनकार कर रही है तो ये अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनते हुए कहने लगे – **'मैया कौन मो सम और ।'** मैया ! भला मेरे समान कोई दूसरा अन्य कौन हो सकता है ? मैं ऐसे कार्य करूँगा, जिससे सर्वत्र तेरा यश बढ़ेगा । मुझे जो खोटा बताता है, वस्तुतः उसकी मति बौरा गयी है अर्थात् वह पूरा पागल ही है । जितने भी ग्वाल बाल हैं, ब्रज गोपों के पुत्र हैं, उनमें मैं ही सर्वश्रेष्ठ, सबका शिरोमणि हूँ । मैया ! तू मुझसे नाराज मत हो । तूने तो अत्यन्त ही प्रेमपूर्वक मेरा पालन-पोषण किया है । मैं आज ही धौरी गैया का दूध दुहकर तुझे प्रसन्न करता हूँ, जिससे तू रीझकर मेरे शीश पर विवाह का सेहरा बाँध देगी । इस ब्रज के बड़े राजा की जो पुत्री है, रूप की, गौर रंग की जो सीमा है, तू उनके साथ मेरा विवाह कर दे ।

एक दिन नन्दलाला सोकर उठे तो मैया से बोले – मैंने रात को एक बड़ा ही विचित्र सपना देखा है । तू मुझे इसका रहस्य समझा कि यह कैसा स्वप्न है ? मैंने स्वप्न में एक विशाल नगर देखा, उसमें एक स्वर्ण महल था । वह महल एक ऊँचे पर्वत पर स्थित था, उसकी शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता है । उस महल के चारों ओर पर्वत पर नाना प्रकार के बड़े ही रमणीक वन-उपवन थे । उन वन-उपवनों में निर्मल जल से भरपूर अत्यन्त स्वच्छ, चित्त को चुराने वाले सरोवर थे । उस नगर के सभी लोग बड़े ही सुन्दर थे और उनके हृदय में अति अनुराग भरा था । वहाँ के राजा का भवन (महल) बड़ा ही सुन्दर और विलक्षण सम्पत्तियों से युक्त था । राजा के महल की पौरी में अद्भुत रूप-गुण की समुदाय एक सुन्दरी क्रीड़ा कर रही थी । उसी सुन्दरी के समान ही उसकी अगणित सखियाँ भी उसके साथ खेल रही थीं । उन सभी की विलक्षण रूप-रचना को देखने पर मेरे नेत्र तृप्त नहीं होते थे । मुझे देखकर वे सभी बालायें हँसने लगीं और उनमें से एक ने तो लजाकर अपने मुख को आवरण से ढँक लिया । एक सखी ने मुझे नेत्रों के संकेत के द्वारा अपने निकट बुला लिया, एक सखी मुझे चिढ़ाने लगी, एक सखी मुझे सिखाने लगी तो एक मुझे प्रणाम करने लगी – 'लाला ! पाँय लागूं ।' एक सखी मुझे अपने पास ले चली तो एक अन्य सखी ने मुझे घेर लिया । एक सखी बोली – 'अरे, तू तो धूर्त और काला है, मैं तुझे अपने संग नहीं लगाऊँगी।' एक सखी मेरे गालों पर गुलचा लगाने लगी तो एक सखी मुझे बरजने लगी तथा एक अन्य प्रेम से मेरी बलैया लेने लगी । एक सखी मेरी ओर देखकर अपने अंगों में फूली नहीं समा रही थी, उसके अंग-अंग प्रेम से पुलकित हो उठे । एक सखी मेरी ओर मुस्कुराकर देखते हुए मेरी मुरली लेकर चली गयी ।अन्य सखी उस मुरली ले जाने वाली सखी पर कुपित होकर उससे मुरली छीनकर मेरे पास ले आई । एक सखी बोली कि यह तो ब्रजराज नन्दरायजी का पुत्र है ।एक सखी ने कहा कि यह तो ग्वारिया है और बछड़ों को वन में चराता है । एक सखी हँसकर बोली कि यह छोटा सा बालक है किन्तु अभी से अपने विवाह के लिए व्याकुल हो रहा है । उन सभी सखियों में जो सबकी मुखिया, सर्वप्रमुख किशोरी थी, उसकी अतीव सुन्दरता का वर्णन करने में तो बुद्धि विथकित हो जाती है । उसके मुख के सौन्दर्य पर तो अगणित चन्द्रमा के समूह न्यौछावर करने योग्य हैं । विधाता ने ऐसे उत्कृष्ट उसके रूप-लावण्य की रचना

की है कि उसको देखने पर दृष्टि लज्जित हो जाती, डर जाती है । उसकी मधुर छवि अखिल रस की सार है । मेरा मन तो उसी के रूप जाल में फँस चुका है । उसे देखकर मन तो मेरे हाथ से निकल ही गया, तन भी उसी का हो चुका है, प्रेम ने मुझे इस तरह अपने वश में कर लिया है ।एक सखी ने मेरे कान के निकट आकर मुझे समझाते हुए कहा – 'अरे गोकुलराय के कुँवर कन्हाई ! यह तो तुम्हारी दुल्हिन है ।' मैया ! इतने में तूने आकर मुझे जगा दिया और मैंने नेत्र खोलकर देखा कि यह तो स्वप्न था । मेरी प्यारी मैया ! अब तू मुझे इस स्वप्न का फल वर्णन करके सुना ।

यशोदा मैया ने कहा – मेरे लड़ैते लाल ! तेरे स्वप्न का मतलब मैं समझ गयी । गिरिराज शिला को मैं प्रतिदिन दूध से स्नान कराती थी, वे गिरिराज बाबा मेरी मनोकामना को पूर्ण करेंगे । जिस घर से मैं तेरा विवाह सम्बन्ध करने की अभिलाषा करती थी, प्रभु ने तुझे स्वप्न में उसी घर का दर्शन करा दिया । तेरे पिता ब्रजराजजी के पुण्य धन्य हैं, जिनके कारण मेरा मन-पसन्द कार्य (बरसाने से तेरा विवाह सम्बन्ध) होने जा रहा है । धन्य है आज की रात्रि, जिसने तुझे मंगलमय भविष्य का दर्शन कराया । जो नारायण देव मेरे इष्ट हैं, मैंने उनसे तेरे विवाह की प्रार्थना की थी, उन्होंने मेरी पुकार सुन ली । उस मैया की कूँख धन्य है, जिसकी बेटी का स्वप्न में तूने दर्शन किया । उस बेटी के पिता भी धन्य हो गये, जिन्होंने इस लोक की दिव्य महामणि को उत्पन्न कर सारे संसार को आनन्द से भर दिया । धन्य है तेरा जन्म, महामुनि गर्ग ने तेरे नामकरण संस्कार के अवसर पर तेरी महामहिमा का उद्घोष कर दिया था । उनकी वाणी सफल हो गयी क्योंकि उन्होंने वृषभानुसुता के साथ तेरे विवाह की पहले ही भविष्यवाणी कर दी थी और अब उस परम मंगलमय विवाह का दिन निकट ही आ रहा है । ऐसा कहकर मैया अपने कन्हैया को बड़े ही भाव से भरकर दुलार करने लगीं ।

यशोदाजी ने बलरामजी की माता से कहा – अरी रोहिणीजी ! मेरे लाला के सपने की बात सुनो । हमारे बड़े ही सौभाग्य हैं कि आज इसने स्वप्न में एक अभूतपूर्व गोपकन्या का दर्शन किया ।उसका रूप तो इस संसार से सर्वथा अतीत, पूर्णतया अलौकिक था । अगणित गोपकन्याओं की वह तो चूड़ामणि है । उसका दिव्य रूप कामदेव के मान को भंग करने वाला है । अपने पुत्र के स्वप्न की बात को सुनकर मेरे हृदय की जो अग्नि थी, वह बुझ गयी । मैं अपने लाल के शुभ विवाह की चिन्ता से सदा तप्त रहती थी, आज स्वप्न में मेरी चिर अभिलषित कन्या ने दर्शन देकर मेरी चिन्ता, मेरे संताप का सदा-सर्वदा के लिए शमन कर दिया । मेरे हृदय के आनन्द का वर्णन नहीं हो सकता ।

नन्दलाला ने अपनी माता के पास एक दिन जाकर कहा – मैया ! आज बछड़े चराते समय वन में मुझे एक ज्योतिषी मिला । मेरी हस्त रेखाओं को देखकर वह अति आनन्द से भर उठा और कहने लगा – कान्हा ! तेरे शरीर के शुभ लक्षण बता रहे हैं कि शीघ्र ही तेरा विवाह होने वाला है । तुझे ऐसी अलौकिक वधू की प्राप्ति होगी कि उसके कारण तेरा सौभाग्य प्रतिक्षण बढ़ता ही जायेगा । तू अपने माता-पिता को सुख देने वाला होगा, गो वंश के पालन में तेरी रुचि बढ़ती जायेगी । तेरा सुयश तीनो लोकों में सर्वत्र फ़ैल जायेगा । तेरे द्वारा अनेक संकटों से बारम्बार व्रज की रक्षा होगी । तेरी सगाई उस कन्या से होगी, जिसके पिता ब्रज के समस्त गोपों के राजा हैं । तेरी दुल्हिन के रूप से बढ़कर अखिल ब्रह्माण्ड और उसके परे भी अन्य कोई सुन्दर रूप नहीं होगा । शील आदि गुणों में कोई उसके बराबर नहीं होगा । वह तेरे नन्दभवन को इस प्रकार प्रकाशित करेगी, जैसे बिजली काले बादलों के बीच चमकती और उन्हें प्रकाशित करती है । श्रीवृन्दावनदासजी कहते हैं कि अपने लाला के मुख से ऐसी बातों को सुनकर मैया ने कन्हैया को अतीव प्रेम से भरकर गोद में बैठा लिया ।

बालकृष्ण मैया से बोले – अरी मैया ! तू किस विधि से मेरा ब्याह करेगी ? जब मैं पट्टे पर बैठूँगा तो कितने लड्डुओं से मेरी गोद भरेगी ? बड़े गोप के घर से जब मेरा विवाह होगा, तब कोई भी मुझसे लड़ने का साहस नहीं कर पायेगा । सभी मेरे आगे सिर झुकाया करेंगे और मुख से दीन वचन का उच्चारण करेंगे । ब्रज के बड़े गोप वृषभानुजी के यहाँ से मेरा विवाह सम्बन्ध होने के कारण सभी सज्जन लोग तो मेरा आदर करेंगे परन्तु दुर्जनों की छाती जलने लगेगी । मैया ! मैं विवाह करके ऐसी दुल्हिन लाऊँगा, जो तेरे मन को अत्यधिक प्रिय लगेगी । उसके चरणों में मैं सबका सिर झुका दूँगा ।

नन्दबाबा जब अपने भवन में आये तो कृष्ण-बलराम को पुचकारकर अपनी गोद में बैठा लिया और कान्हा से बोले – 'गिरधर ! तू दिन पर दिन दुबला क्यों होता जा रहा है ?' यशोदा मैया ने कहा – 'यह अभी से विवाह करने के लिए उतावला हो रहा है, इसलिए इसके सभी सखा इसको चिढ़ाते हैं ।' जब मैया ने बाबा से कन्हैया के विवाह के लिए अधीरता को बताया तो लज्जा के कारण नन्दलाला अपने बाबा की छाती से चिपट गये ।नन्दबाबा ने मुस्कुराते हुए अपने पुत्र से पूछा – 'श्यामसुन्दर ! मुझे बता, तू कितनी बड़ी दुल्हिन लेगा ? विवाह करने के लिए बहुत अधिक धन-सम्पत्ति की आवश्यकता होती है और तू तो कोई कमाई भी नहीं करता है । लाला ! तू दाऊ की शिक्षा को नहीं मानता है, इसलिए मैं तेरी बरात में नहीं चलूँगा ।' जब नन्दबाबा ने बरात में चलने से इनकार किया तो कन्हैया दोनों हाथों से आँख मलने लगे, रोने लगे । नन्दबाबा ने कहा – रो मत ! मैं तेरी बरात में चलूँगा किन्तु अब चंचलता छोड़ दे, गर्व मत किया कर । बेटा ! मैं तेरा बहुत बढ़िया विवाह करूँगा । तेरी बरात में देश के सभी बड़े-बड़े राजा चलेंगे । ग्वालबालों को मैं बढ़िया वस्त्र और आभूषण भेंट में दूँगा । जो मेरे मोहन को सुख देने वाले हैं, ऐसे सभी तेरे सखाओं को बरात में मैं ले चलूँगा । बरात में चलने के लिए मैं बड़े-बड़े गजराज मँगाऊँगा ।आगे-आगे सजे-धजे हाथी चलेंगे और उनके पीछे सभी बराती चलेंगे । 'काबुल के तुरकी जु मगाऊँ, बड़ कच्छी अरु ताजी ।' काबुल के तुरकी मँगाऊँगा । (लाड़सागर से संग्रहीत)

'वृन्दावन' के ही अन्तर्गत 'बरसाना'

स्कन्द पुराण में कहा गया है – **अहो वृन्दावनं रम्यं यत्र गोवर्द्धनो गिरिः ।**
वृन्दावन कितना सुन्दर है, जहाँ गोवर्द्धन पर्वत स्थित है । श्रीजीवगोस्वामीजी ने लिखा है – **श्रीवृन्दावन भूमौ नन्दीश्वराष्टकूटवरसानुधवलगिरि सुगन्धिकादयोबहवोऽद्रयो वर्त्तन्ते ।** (वैष्णव तोषिणी)

वृन्दावन के ही ये सब पर्वत हैं जैसे नन्दीश्वर अर्थात् नन्दगाँव, अष्टकूट पर्वत (अष्ट महासखियों के पर्वत), वरसानु शब्द से बरसाना बना है जिसका अर्थ है सुन्दर चोटी । बरसाना भी वृन्दावन में है तथा नन्दगाँव भी वृन्दावन में है । इनके अतिरिक्त धवल गिरि घाटा में है, सुवर्ण गिरि (सुनहरा गाँव), सौगन्धिक पर्वत आदि बहुत से पर्वत वृन्दावन में ही हैं । इस प्रकार पुराणों में वृन्दावन के जिस स्वरूप का वर्णन किया गया है, उसके अनुसार बरसाना, नन्दगाँव और गोवर्द्धन आदि वृन्दावन में ही हैं । रसिकों ने भी लिखा है –

बीस कोस वृन्दा विपिन पुर वृषभानु उदार । तामें गह्वर वाटिका जामे नित्य विहार ॥

वृन्दावन बीस कोस का है, जिसमें वृषभानुपुर (बरसाना) है । सभी रसिकों ने ऐसा लिखा है । हरिरामव्यासजी ने लिखा है – **सुभग गोरी के गोरे पाँय । श्याम काम बस जिनहिं हाथ दै, राखत कंठ लगाय ।**
किशोरीजी के चरणों का वर्णन है – **कोटि चन्द नख मणि पर वारौं, गति पर हंस गिराय ।**
किशोरीजी के श्रीनखों पर करोड़ों चन्द्रमा न्योछावर कर दो । जब वे चलती हैं तो उनकी चाल पर हंसों को न्योछावर करके फेंक दो । **'नूपुर धुनि पर मुरली वारौं, यावक पर ब्रजराय ।'** लोग कहते हैं कि श्यामसुन्दर बहुत अच्छी बाँसुरी बजाते हैं किन्तु श्रीजी के नूपुरों की ध्वनि पर तो वंशी न्यौछावर है । और तो क्या कहें, किशोरीजी के चरणों में जो महावर लगा है, उस पर तो नन्दनन्दन को भी न्यौछावर कर दो ।

'नाचत रास रंग मह दरस सुधंग दिखावत भाय । जमुना जल से दूर करत रज चरनन पंक छुटाय ।'

जब श्रीजी रास में नृत्य करती हैं तो उनके चरणों में ब्रज रज लग जाती है, यह देखकर श्यामसुन्दर स्वयं उनके चरणों को अपने हाथों में लेकर यमुना जल से चरणों को धोते हैं । व्यासजी वृन्दावन की लीला गा रहे हैं । यह कैसा वृन्दावन है ?

धनि वृषभानु धन्य बरसानो, धनि राधा की माय । जहाँ प्रगटी नटनागरि खेलत, पति सों रति पछताय ॥
जाके परस सरस वृन्दावन, बरसत रसनि अघाय ।ताके शरण रहत काको डर, कहत 'व्यास' समुझाय ॥

श्रीव्यासजीमहाराज कहते हैं – श्रीवृषभानुजी धन्य हैं, बरसाना धन्य है, राधारानी की माँ धन्य हैं । बरसाने में नटनागरी राधारानी प्रकट हुईं, उनके चरण कमलों के स्पर्श से ही वृन्दावन में रस बरसता है ।

रसिकों ने यह भी लिखा है कि लाड़िलीजी के चरण वृन्दावन में ही मिलते हैं और वृन्दावन में निवास करने से ही लाड़िलीजी के चरणकमलों की प्राप्ति होती है यानी इनका आपस में अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है अर्थात् जब वृन्दावन जाओगे तब राधारानी मिलेंगी और राधारानी के चरणकमलों का ध्यान किये बिना वृन्दावन धाम की प्राप्ति नहीं होगी । रसिकों ने कहा है कि 'राधा' तत्त्व कहाँ मिलेगा तो वे लिखते हैं –

यद् वृन्दावनमात्र गोचरमहो यन्न श्रुतीकं शिरोप्यारोढुं क्षमते न यच्छिवशुकादीनां तु यद् ध्यानगम् ।
यत् प्रेमामृतमाधुरीरसमयं यन्नित्यकैशोरकम् तद् रूपं परिवेष्टुमेव नयनं लोलायमानं मम ॥ (श्रीराधासुधानिधि - ७६)

वृन्दावन में ही उनके दर्शन होते हैं । शिव-शुकादि जिस राधा तत्त्व को नहीं पा सकते, उसकी प्राप्ति वृन्दावन में होती है । जो नित्य किशोर तत्त्व है, उस राधा तत्त्व को देखने के लिए मेरी आँखें व्याकुल हो रही हैं ।

वृन्दावन में ही श्रीजी मिलेंगी तो वृन्दावन कैसे मिलेगा तब रसिकों ने उत्तर दिया – **'यद् राधापदकिङ्करीकृतहृदां सम्यग्भवेद् गोचरम् ।'** जो श्रीराधारानी की किंकरी हैं, उन्हीं को नित्य वृन्दावन धाम की प्राप्ति होगी ।

वृन्दावन में राधारानी हैं और राधारानी में वृन्दावन है, यह प्रतिज्ञा तभी पूरी होगी जब प्राचीन मत माना जायेगा कि वृन्दावन में श्रीजी हैं और इसी वृन्दावन धाम की प्रथम वन्दना करी है ग्रन्थकारों ने – **तस्या नमोऽस्तु वृषभानुभुवो दिशेऽपि ।** इसलिए श्रीमद्भागवत में इसी वृन्दावन का वर्णन किया गया है । ऐसा आचार्यों ने लिखा है । वृन्दावन के अन्तर्गत बरसाना, गह्वर वन आदि को भी सभी आचार्यों ने गाया है । जैसे श्री हितहरिवंश महाप्रभुजी का पद है – **देख सखी राधा पिय केलि ।** यह हित चतुरासी जी के नित्य विहार का पद है – 'हे सखि ! राधा-श्यामसुन्दर की लीला देख ।' कहाँ देखें ? इनकी गुप्त लीला कहाँ होती है ?

'ये दोउ खोर खिरक गिरि गह्वर, विहरत कुँवरि कंठ भुज मेलि ।'

अगर कोई इस पद को ध्यान से देखे तो इसमें जिन चारों स्थानों पर श्यामा-श्याम के विहार का वर्णन किया गया है तो ये चार स्थान पाँच कोस के वृन्दावन में नहीं हैं । खोर – दुनिया में प्रसिद्ध खोर बरसाने में ही है – साँकरी खोर । अगर कोई खोर का अर्थ गली लगा भी ले तो खिरक कहाँ है ? यह है वृषभानु खेरा । द्वापर के कृष्ण लीला काल में वहाँ एक गोपी रहती थी । गिरिराज पूजन के प्रसंग में उसने यहीं बरसाने में ही गिरिराजजी को भोग अर्पित किया तो गिरिराज महाराज ने बरसाने के निकट स्थित वृषभानु खेरा तक अपने हाथ फैलाकर उसके अर्पित भोग को ग्रहण कर लिया । ऊँचा गाँव और प्रेम सरोवर के बीच में है वृषभानु खेरा या खिरक । खिरक और कहीं नहीं है । अगर पाँच कोस के वृन्दावन में कोई खोर और खिरक दोनों मान ले तो गिरि कहाँ है ? गिरि माने पर्वत । पञ्च कोसीय वृन्दावन में तो कोई गिरि (पर्वत) है ही नहीं । यह गिरि है ब्रह्माचल गिरि, जो बरसाने में है । इसी प्रकार गह्वर वन भी बरसाने में ही है । खोर, खिरक, गिरि, गह्वर – ये चारों स्थान बरसाने में ही हैं । साँकरी खोर और गह्वर वन की लीला स्वामी हरिदासजी ने भी गाई है और हितहरिवंश महाप्रभुजी ने भी गाई है । स्वामी हरिदासजी ने साँकरी खोर की दान लीला भी गाई है – **हमारो दान मारयो इन । रात बिरात काहू की बेटी.. ।**

गह्वरवन की लीला भी उन्होंने गाई है – **प्यारी जू आगे चल गह्वर वन भीतर जहाँ बोलै कोयल री ।**
अति ही विचित्र फूल पत्रन की सेज्या रची, रुचिर सँवारी तहाँ तूब सोइल री ।
छिन छिन पल पल तेरी ए कहानी तुव मग जोइल री । श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत छबीलौ काम रस भोइल री ।

काहू के बल भजन कौ काहू के आचार । व्यास भरोसे कुँवरि के सोवत पाँव पसारि ॥

इस तरह बरसाने के लीला स्थलों की महिमा सभी आचार्यों ने गाई है । इतना होने पर भी प्रश्न उठता है कि पाँच कोस के स्थान को ही वृन्दावन क्यों माना जाता है ? इसका उत्तर भी आचार्यों ने दिया है । बृहद् गौतमीय तन्त्र में पञ्च योजन वृन्दावन का वर्णन किया गया है ।

पञ्चयोजनमेवास्ति वनं मे देहरूपकम् । कालिन्दीयं सुषुम्णाख्या परमामृतवाहिनी ॥

इस पाँच योजन के वृन्दावन में भी सुषुम्णा नाड़ी के रूप में यमुनाजी का वर्णन है । पाँच कोस के स्थान को ही वृन्दावन क्यों कहा जाता है तो इसका उत्तर है – **'सर्वमुख्यत्वविवक्षया'** पाँच कोस की यह भूमि महारास की भूमि है, इसलिए इसे मुख्यता दी गयी है । यह बड़ी संगत बात है । वस्तुतः तो वृन्दावन बीस कोस का है । बरसाना, नन्दगाँव, गोवर्धन आदि सब वृन्दावन में ही हैं ।

वृन्दावन में बास कर साग पात नित खात । तिनके भागिन को निरखि ब्रह्मादिक ललचात ॥

वास्तविक विद्यार्थी 'बाबाश्री'

श्रीझा जी महाराज (निम्बार्क संस्कृत विद्यालय, वृन्दावन के प्रधानाचार्य, भारत वर्ष के संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् एवं श्रीबाबा महाराज के शिक्षा-गुरु) द्वारा बाबाश्री के सम्बन्ध में कथित संक्षिप्त भावोद्गार (२७ /१२/२०१३)

मानमन्दिर में बाबा के द्वारा जो कुछ भी हो रहा है, प्रिया-प्रियतम के सम्बन्ध में जो कुछ भी हो रहा है, इससे बढ़कर दुनिया में कोई चीज नहीं है; इससे बढ़कर भारतीय संस्कृति में कुछ नहीं है, इससे बढ़कर तो अठारह पुराणों में कुछ नहीं है, इसके बिना गीता-भागवत अधूरी हैं । भक्ति के बिना दुनिया में कुछ भी सत्य नहीं है ।

आज दुनिया में 'गीता' के जोड़ का कोई ग्रन्थ नहीं है । सारी दुनिया 'भगवद्गीता' को मानती है । संयुक्त राष्ट्र संघ ने 'गीता' को अब 'विश्व-धर्मग्रन्थ' मान लिया है । इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने गीता को राज्यधर्म माना है । हरियाणा सरकार ने 'गीता-जयन्ती' को राष्ट्रीय पर्व माना है । कहने का तात्पर्य यही है कि गीता एक ऐसा सम्मानित ग्रन्थ है, जिसको महात्मा गाँधी ने माना, विनोबा भावे ने माना, भारत के सभी देशभक्त महापुरुषों व नेताओं ने माना, जयप्रकाश जैसे नास्तिक नेता ने भी माना । गीता के बारे में विविध प्रकार की गलत व्याख्याएँ होती हैं । मैं डंके की चोट पर कह सकता हूँ, अपने सम्पूर्ण जीवन के अध्ययन के आधार पर कह सकता हूँ, मेरे पूज्य गुरुदेव, जो सभी शास्त्रों के विद्वान् थे, उनके भी मतानुसार कह सकता हूँ कि 'गीता' भगवद्भक्ति का ग्रन्थ है ।

अस्तु, मेरे कहने का यही तात्पर्य है कि बाबामहाराज के द्वारा जो श्रीराधारानी की भक्ति का प्रचार होता है, वह अद्वितीय कार्य है, दुनिया का सर्वश्रेष्ठ कार्य है । श्रीराधारानी व श्रीकृष्ण से बढ़कर श्रेष्ठ तत्त्व दुनिया में कोई नहीं है । मेरे पूज्य गुरुदेव पण्डित भगीरथ झा जी, जो मिथिला में पैदा हुए थे, जिनके सभी साथी अद्वैत वेदान्ती थे, वे सभी शैव थे किन्तु उन्होंने अपना सारा जीवन राधाकृष्ण की भक्ति में लगाया, सम्पूर्ण शास्त्रों के अध्ययन में लगाया और राधामाधव को ढूँढने में लगाया । मेरा तो दावा है कि विगत एक हजार वर्षों में, किसी भी सम्प्रदाय में, किसी भी एक व्यक्ति के द्वारा राधाकृष्ण के सम्बन्ध में इतना अधिक विवेचन किसी ने नहीं किया और उन्होंने सिद्ध कर दिया कि श्रीराधाकृष्ण से बड़ा तत्त्व दुनिया में कोई नहीं है । इस दृष्टि से श्रीबाबामहाराज का मिशन, उनका प्रचार सर्वोपरि है; उनके बारे में कुछ कहना मैं परम आवश्यक समझता हूँ ।

हमारे बाबा बचपन से वैरागी हैं, बचपन से श्रीकृष्णभक्त हैं, प्रयाग उनकी जन्मभूमि है । लगभग ७० वर्ष पूर्व वे प्रयागराज विश्वविद्यालय से बी.ए. पास करके ब्रजभूमि में आये और बरसाना में उन्होंने अखण्डवास किया । बरसाने के ही प्रेमसरोवर के निकट स्थित गाजीपुर 'संस्कृत विद्यालय' से उन्होंने व्याकरण से मध्यमा तक अध्ययन किया । संस्कृत भाषा से बाबा को अनुराग था । जो संस्कृत नहीं जानता, वह भारतीय संस्कृति को नहीं जान सकता; वह भारतीय कहलाने का भी अधिकारी नहीं है; ऐसा भारत के भूतपूर्व सम्माननीय राष्ट्रपति डॉ राधाकृष्णन ने कहा था ।

बरसाने में मध्यमा से संस्कृत-व्याकरण की पढ़ाई करके बाबा वृन्दावन आये । वृन्दावन में उनके आने का उद्देश्य था कि यहाँ संस्कृत-व्याकरण का श्रेष्ठ विद्वान् कौन है, जिससे मैं व्याकरण का अध्ययन कर सकूँ । संस्कृत के विद्वान् की खोज करते हुए बाबा मेरे पास आये और मुझसे कहा कि मैं व्याकरण पढ़ूँगा, शास्त्री, आचार्य तक अध्ययन करूँगा, अन्य भी संस्कृत सम्बन्धी उच्च स्तर का अध्ययन करूँगा । मैंने बाबा को देखा तो वे बड़े ही तेजस्वी प्रतीत हुए, बड़े ही संस्कारी मालूम पड़े । मैंने उनसे कहा – 'बाबा ! आप व्याकरण पढ़कर क्या करेंगे ? आप तो वेदान्त का अध्ययन कीजिये ।' एक घंटे तक मैंने बाबा से बात की और यही कहा कि वेदान्त से बढ़कर दुनिया में कुछ भी नहीं है, सभी दर्शनों का सार वेदान्त में है । बाबा को मेरी बात समझ में आ गयी और उन्होंने मुझसे कहा – 'ठीक है, आप मुझे वेदान्त ही पढ़ाइये ।' वेदान्त के शास्त्री के कोर्स में शांकर भाष्य (शंकराचार्य का भाष्य) था, इसलिए मैं बाबा को वह पढ़ाने लगा । उन्हीं दिनों वृन्दावन में स्वामी अखण्डानन्दजी का एक शिष्य था, जो बड़े फैशन के साथ रहता था । उसने स्वामीजी से कहा कि आप मेरे लिए काशी में एक पत्र लिख दीजिये, मैं काशी में वेदान्त का अध्ययन करूँगा । स्वामीजी ने उससे कहा कि मैं तुम्हारे लिए इसकी व्यवस्था यहीं वृन्दावन में कर दूँगा, काशी जाने की कोई आवश्यकता नहीं है । स्वामीजी का वह सन्यासी शिष्य बड़ा घमण्डी था । उसने कहा कि यहाँ वृन्दावन में मुझे वेदान्त कौन पढ़ायेगा ? स्वामीजी ने कहा कि एक बार देख तो लो, यदि तुमको संतोष हो जाए तो ठीक है । मैं उसको हॉल में पढ़ाता था, शायद बाबा को याद होगा । यह सन्यासी, जो कि स्वामी अखण्डानन्दजी का शिष्य था, वह कहने को तो सन्यासी था लेकिन बड़े ही फैशन से रहता था, सुगन्धित तेल लगाता था, बाँये हाथ में बढ़िया-सी घड़ी पहनता था और दूसरे हाथ में पर्स लिए रहता था । ऐसे फैशन के साथ वह मुझसे वेदान्त पढ़ने के लिए आता था, दूसरी ओर हमारे बाबा थे, जो घुटनों तक की गाती (धोती) पहनते थे और वृन्दावन में भी मधुकरी माँगा करते थे । बहुत अधिक प्रतिभाशाली होने पर भी उनका जीवन कठोर त्याग-वैराग्य से युक्त था । बिल्कुल सादे विरक्त वेष में बाबा मुझसे पढ़ने के लिए आते थे और जब स्वामीजी का शिष्य भी पढ़ने के लिए आता तो पूरा हॉल उसके द्वारा प्रयुक्त तेल की सुगन्ध से महकने लगता था । बाबा उसकी ओर बार-बार देखा करते थे । एक दिन जब वह पढ़कर चला गया तो बाबा ने मुझसे कहा – 'गुरुजी ! यदि आप अनुमति दें तो क्या मैं इसको डाँट दूँ क्योंकि यह सन्यासी होकर भी इतने फैशन से रहता है, यह तो बहुत अनुचित है ।' मैंने कहा – 'नहीं बाबा, उसको कुछ मत कहिये क्योंकि स्वामी अखण्डानन्दजी मेरा बहुत सम्मान करते हैं ।' इस प्रकार मेरी बात को सुनकर फिर बाबा ने उससे कुछ नहीं कहा ।

छात्रावस्था से ही बाबा का जीवन वैराग्यमय, बड़ा ही उच्च कोटि का जीवन था । बाबा की मेरे प्रति भी जो कृतज्ञता रही है, उसको भी बताता हूँ । आजकल जो वैष्णव महात्मा होते हैं, महन्त होते हैं, वे गृहस्थ गुरु को नहीं मानते हैं । काशी में एक बार विद्वत् समाज की सभा थी, उसमें काशी के बड़े-बड़े विद्वान् आये थे । वरिष्ठ विद्वान् शिवकुमार शास्त्री भी उस सभा में आये थे, उनका एक शिष्य उस समय किसी स्थान का मण्डलेश्वर हो गया था, किसी सम्प्रदाय का बड़ा महन्त था, वह भी उस सभा में बैठा था । शिवकुमार शास्त्रीजी, जो कि काशी के विद्वानों में अत्यधिक सम्मानित थे, जब वे उस सभा में आये तो वहाँ उपस्थित सभी महन्त उनके सम्मान हेतु अपने आसन से उठकर खड़े हो गये और उनको प्रणाम किया परन्तु वह जो शिवकुमार शास्त्रीजी का विद्यार्थी था, उनसे विद्याध्ययन किया था, वह अब मण्डलेश्वर बन चुका था, रामानुज सम्प्रदाय का आचार्य हो चुका था, वह अपने गुरुजी के सम्मान में न तो आसन से उठकर खड़ा हुआ और न ही उनको प्रणाम किया, केवल उसने दोनों हाथ इस मुद्रा में खड़े किये कि उसका अभिप्राय आशीर्वाद देना प्रतीत होता था, दूसरे रूप में उसे प्रणाम करना भी कहा जा सकता है किन्तु जिस तरह उसने हाथ उठाया, वह गुरु के लिए प्रणाम करने का वैधानिक ढंग नहीं था । यह देखकर शिवकुमार शास्त्रीजी को बड़ा दुःख हुआ, उन्होंने सोचा कि देखो, इस सभा में बड़े-बड़े महन्त तक मेरे सम्मान में खड़े हो गये, मुझे प्रणाम किया किन्तु जिसको मैंने पढ़ाया, मुझे गृहस्थ मानकर वह अपने आसन से खड़ा नहीं हुआ, मुझे प्रणाम तक नहीं किया । इस घटना के बाद उन्होंने अपने घर

में लिख दिया कि आज से मैं किसी वैष्णव को नहीं पढ़ाऊँगा । साधु-समाज में ऐसी विकृति भी देखने में आती है । मैं तो कुछ भी नहीं हूँ, एक साधारण गृहस्थ हूँ । मेरा सारा जीवन संस्कृत-व्याकरण और न्यायशास्त्र के अध्ययन और अध्यापन में ही बीता । एक दिन भी भगवान् के भजन में नहीं बीता । संस्कृत-व्याकरण के बारे में आदि शंकराचार्यजी ने कहा है – 'न हि न हि रक्षति डुञ्करी करणे' – डुञ्करी करने से कुछ भी नहीं होगा । दूसरा शास्त्र मैंने न्याय पढ़ा । आपको आश्चर्य होगा कि वेदान्त और न्याय शास्त्र के द्वारा जिस मुक्ति की बात कही गयी है, उस मुक्ति को पाने के लिए काशी के बड़े-बड़े विद्वान् काशी को छोड़कर निकट स्थित मुगलसराय भी इस आशय से नहीं जाते कि वहाँ जाने से मुक्ति नहीं मिल सकेगी । उस मुक्ति के बारे में ब्रज-वृन्दावन धाम का रसिक भक्त क्या कहता है ? वह कहता है – 'वरं वृन्दारण्ये.....' भगवान् मुझे वृन्दावन में गीदड़ बना दें, वह अच्छा है परन्तु मुझे आदिशंकराचार्य तथा न्याय शास्त्र के द्वारा प्रतिपादित मोक्ष नहीं चाहिए । अब आप स्वयं कल्पना कीजिये कि वृन्दावन क्या चीज है, ब्रजभूमि क्या चीज है, भक्ति क्या चीज है ? इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो बाबा को मैंने कुछ नहीं पढ़ाया, बाबा तो पढ़े-पढ़ाये थे, मैं तो निमित्त मात्र ही था परन्तु बाबा ने जो मेरा उपकार किया, मुझसे उसे कहे बिना नहीं रहा जाता है । मेरी एक पुत्री बी.ए. पास करके विवाह योग्य हो गयी थी किन्तु मेरे पास उसके विवाह के लिए एक भी पैसा नहीं था । मैंने इस सम्बन्ध में बाबा को फोन के माध्यम से संकेत किया । इसके अगले दिन मैं विद्यार्थियों को पढ़ा रहा था । मेरे पास बाबा के परम कृपापात्र श्रीराधाकान्तशास्त्रीजी आये और उन्होंने मुझसे कहा – 'गुरुजी ! भीतर चलिए । एक परम आवश्यक कार्य के सम्बन्ध में आपसे बात करनी है ।' ऐसा कहकर शास्त्रीजी मुझे भीतर ले गये और उन्होंने मुझे दो लाख रुपये दिए और कहा कि श्रीबाबामहाराज ने आपके लिए यह द्रव्य कन्यादान के लिए भेजा है, इसे आप स्वीकार करें । अपने ऊपर श्रीबाबा महाराज की ऐसी अपार करुणा को देखकर मैं दंग रह गया । मैंने निम्बार्क सम्प्रदाय के आचार्य श्रीजीमहाराज को पढ़ाया, स्वामी अखण्डानन्द सरस्वतीजी को पढ़ाया, ये कोई साधारण व्यक्ति नहीं थे, भारतवर्ष की महान विभूति थे । हालाँकि ये सभी मेरा सम्मान करते थे किन्तु श्रीबाबामहाराज ने मेरे साथ जैसी कृतज्ञता का व्यवहार किया, ऐसा व्यवहार दुनिया में आज तक किसी ने मेरे साथ नहीं किया । मैं बाबामहाराज का बहुत बड़ा आभारी हूँ । मैं उन्हें भारतवर्ष का एक बहुत महान सन्त मानता हूँ । मैं तो एक साधारण गृहस्थ हूँ और मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं है । मेरे गले और पेट में दर्द है, मेरी मृत्यु निकट ही है । मैं मानमन्दिर में बाबा से यही प्रार्थना करने आया हूँ कि मृत्यु के समय मुझे प्रिया-प्रियतम की स्मृति बनी रहे और मैं हँसते-हँसते अपने प्राणों का त्याग कर दूँ । श्रीबाबा मुझे यह आशीर्वाद दें । इन्हीं शब्दों के साथ मैं बाबा को प्रणाम करता हूँ और यहाँ मानमन्दिर में बाबा के अनुयायी जितने भी सन्त-भक्त और साध्वियाँ हैं, आप सभी प्रिया-प्रियतम के भक्त हैं । मैं आप सभी से आशीर्वाद माँगता हूँ । इतना ही कहकर मैं अपनी वाणी को विराम देता हूँ और अन्त में पुनः श्रीबाबामहाराज को कोटि-कोटि प्रणाम करता हूँ ।

गौ–सेवकों की जिज्ञासा पर माताजी गौशाला का Account number दिया जा रहा है –

SHRI MATAJI GAUSHALA, GAHVARVAN,BARSANA, MATHURA

Bank – Axis Bank Ltd , A/C – 915010000494364

IFSC – UTIB0001058 BRANCH – KOSI KALAN,

MOB. NO. – 9927916699

अप्रतिम प्रतिभाशाली 'बाबाश्री'

श्रीमैथिलीशरण चौबेजी (कामाँ वाले) के बाबाश्री के बारे में विचारांश (अप्रैल २०२३)

प्रश्न – आप सर्वप्रथम श्रीबाबा महाराज से कब और कहाँ मिले थे, उसके बारे में कृपा करके बताएँ ।

उत्तर – मैं सन् १९६९ में कामाँ आया था, 'स्टेट बैंक, कामाँ' में मेरी सर्विस लगी थी । मुझे सन्तों का दर्शन करना, उनके साथ बैठना बहुत अच्छा लगता था । एक बार मैं कामाँ में गोकुलचन्द्रमाजी का दर्शन करने उनके मन्दिर में गया था । मैंने ठाकुरजी से प्रार्थना की – 'हे प्रभो ! आप मुझे यहाँ के जो भी सच्चे भक्त, सच्चे अनुयायी हों, उनका दर्शन प्रदान करें ।' इसके अगले शनिवार को मेरा बरसाना आने का कार्यक्रम बना । मेरे साथ में हरियाणा के एक ब्राह्मण और कामाँवासी भोलेरामशर्माजी तथा हमारी बहन थीं – मधुवासी चतुर्वेदी । हम लोग कामाँ से बस द्वारा पहले नन्दगाँव आये और फिर ताँगे से बरसाना आये । यहाँ हम लोगों ने श्रीजी के दर्शन किये, राजा के मन्दिर के दर्शन किये । वहाँ हमें पता चला कि गह्वरवन में एक सन्त रहते हैं ।

प्रश्न – क्या वहीं आपको बाबा के बारे में पता चला, इसके पहले क्या आप बाबा को नहीं जानते थे ?

उत्तर – नहीं, पहले हमें बाबा के बारे में कुछ पता नहीं था । हम लोग राजा के मन्दिर से गह्वरवन में आये, यहाँ हम लोगों ने राधासरोवर के तट पर बैठकर अपने साथ लाया हुआ प्रसाद पाया । गह्वरवन में जो बाबा की कुटी थी, वहाँ एक हैण्डपम्प लगा था तो हम पानी लेने के लिए वहाँ गये । वहाँ मुझे बाबामहाराज की माताजी के दर्शन हुए । माताजी को सन्त स्वरूप में देखकर हम लोगों ने उन्हें दण्डवत प्रणाम किया । माताजी ने हम लोगों को बताया कि मेरा पुत्र रमेश ऊपर मानमन्दिर में रहता है, वह एक अच्छा साधु है । माताजी के बताने पर फिर हम लोग मानमन्दिर के लिए पहाड़ पर चढ़े । उस समय मानमन्दिर पर जाने के लिए आजकल की तरह सीढ़ियाँ नहीं थीं । टूटे हुए पत्थर थे, उन्हीं पर चढ़कर हम लोग मानमन्दिर आये । उस समय मानमन्दिर भी जीर्ण-शीर्ण अवस्था में था, खण्डहर बन चुका था । बाबा एक कुटिया में रहते थे, हम लोग उनका दर्शन करने वहाँ गये । उस कुटिया में एक तखत पड़ा था । वर्तमान में जो बिजली का काम करने के लिए कमरा है, उसके बगल वाले कमरे में बाबा रहते थे । उस कमरे को गाय के गोबर से लीपा जाता था । जब हम लोग उस कमरे में पहुँचे तो बाबा तखत पर बैठे थे, उस कमरे में बिजली नहीं थी । सूर्य का प्रकाश भी बहुत कम आता था । जिस प्रकार स्वामी विवेकानन्दजी के चित्र में देखो तो वे सिर पर एक पगड़ी बाँधे रहते हैं, ठीक उसी प्रकार बाबामहाराज भी अपने सिर पर पगड़ी या एक साफा बाँधे हुए थे । कमरे में प्रकाश बहुत कम था, अँधेरा ही था लेकिन अँधेरे में भी बाबा का स्वरूप स्पष्ट दिखायी दे रहा था अर्थात् उनके चेहरे पर एक अद्भुत प्रकाश था, जिसका हम लोगों ने दर्शन किया । ऐसा प्रकाश, ऐसा तेज तो प्रायः किसी भी सन्त के चेहरे पर देखने को नहीं मिलता है; ऐसा दिव्य प्रकाश मैंने बाबामहाराज के चेहरे पर देखा । गह्वरवन में कुण्ड के किनारे मौनी बाबा रहा करते थे, जो एक सिद्ध महापुरुष थे, उनके चेहरे के चारों ओर भी हमने दिव्य प्रकाश-मण्डल देखा था । जैसे चन्द्रमा की आभा होती है, वैसी ही आभा मैंने मौनी बाबा के चेहरे पर देखी थी और वैसी ही आभा बाबामहाराज के चेहरे पर देखी थी । उनका प्रथम बार दर्शन करके हम लोग बहुत प्रभावित हुए । बाबा ने मुझसे पूछा कि तुम कहाँ रहते हो, क्या करते हो ? मैंने बताया कि इस समय मैं 'स्टेट बैंक कामाँ' में सर्विस करता हूँ और वहीं रहता हूँ तथा जाति से मैं चतुर्वेदी (चौबे) हूँ । मेरी बहुत प्रबल इच्छा थी ब्रज के किसी सिद्ध सन्त के दर्शन करने की, तो मैं बरसाने आया, नीचे माताजी के दर्शन हुए, उन्होंने आपके बारे में बताया तो हम लोग आपके दर्शन करने यहाँ आ गये । बाबा कहने लगे कि अरे, हम तो सन्त नहीं हैं, हम तो भिक्षा माँगने वाले, घर-घर रोटी माँगने वाले साधु हैं । मैंने कहा – 'महाराज ! आप ठीक कह रहे हैं, जो असली साधु होते हैं, वे तो भिक्षा ही माँगते हैं लेकिन आपमें एक विशेष तेज है, जो हमें आकर्षित कर रहा है । आपकी आज्ञा हो तो थोड़ी देर आपके निकट यहाँ नीचे बैठ जाएँ ।' बाबा ने कहा – 'हाँ, खूब आराम से बैठो ।' बाबा की स्वीकृति

मिलने पर हम तीन लोग उनके कमरे में बैठ गये । इसके बाद बाबा ने हम लोगों से पूछा कि आप लोग भगवान् की उपासना से सम्बन्धित कोई नित्य कर्म करते हैं कि नहीं ? मैंने बताया कि मैं तो बचपन से नित्य कर्म करता हूँ । हमारे घर में गोपालजी विराजमान हैं, हमारी अम्मा उनकी सेवा करती हैं । गीताजी का पाठ भी मैं नित्य ही करता हूँ । बाबा ने कहा कि यह तो बहुत अच्छी बात है, गीता नित्य ही पढ़ा करो । हमारे यहाँ गह्वरवन की कुटी में नित्य ही संध्या को सत्संग होता है और रात को मानमन्दिर के रासमण्डल पर कीर्तन होता है । यदि आपकी इच्छा हो तो इसका लाभ उठाने के लिए कभी भी यहाँ आ सकते हो । मैंने कहा – 'बाबा ! अवश्य ही हम आयेंगे ।' इसके बाद हम लोग बाबा महाराज को प्रणाम करके चले गये । बाबा के इस प्रथम दर्शन के बाद जब अगला शनिवार आया तो मैं पुनः बाबा के दर्शन के लिए मानमन्दिर में आया । संध्या को मैंने गह्वरवन की कुटी में बाबामहाराज का सत्संग सुना । पहली बार जब हम लोग मानमन्दिर आये थे, तब तो बाबा का सत्संग नहीं सुन पाए थे किन्तु उसके अगले शनिवार को हमें महाराजजी के संध्याकालीन सत्संग का लाभ मिला ।

श्रीबाबामहाराज के सन्दर्भ में एक विशेष चमत्कारिक घटना मैं बताता हूँ, जैसा मुझे अपने जीवन में आज तक किसी अन्य सन्त में देखने को नहीं मिला और जिसके कारण ही मैं बाबा से बहुत अधिक प्रभावित रहा । जब दूसरी बार मैं बाबा के दर्शन के लिए घर से चला तो यह सोचकर चला था कि मैं बाबा से साधना से सम्बन्धित कुछ प्रश्न पूछूँगा लेकिन मैंने यह भी सोचा कि यदि बाबा सिद्ध सन्त हैं तो बिना पूछे ही मेरे प्रश्न का उत्तर दे देंगे और मुझे उनसे कुछ पूछने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी । मेरी इस बात को आप शत-प्रतिशत सत्य ही मानिए, मैं बाबा के बारे में कोई अतिश्योक्ति या अपने मन से बनाकर व्यर्थ की प्रशंसा नहीं कर रहा हूँ । मेरे मन में यही प्रश्न था कि एक गृहस्थ को भगवान् की उपासना किस तरह करना चाहिए; ठाकुरजी के चरणों में मन किस प्रकार लगे ? सच्चे सन्तों का साथ कैसे मिले ? जब मैं सत्संग-स्थल कुटी में बैठा तो बाबा ने अचानक इसी विषय पर प्रवचन किया । श्रीबाबामहाराज ने सब बताया कि भगवान् की उपासना कैसे करनी चाहिए, सच्चे सन्त की क्या पहचान है ? बाबा ने बताया कि सच्चे संतों के शरीर पर एक आभा मण्डल होता है, जिससे भक्तिमय किरणें निकलती रहती हैं, उनके शरीर की एक विशेष सुगन्ध होती है, वह सुगन्ध ही विशेष कल्याण करती है । यदि उस सुगन्ध की ही प्राप्ति हो जाए तो मनुष्य की चित्तवृत्ति बदल जाती है ।

शाम को सत्संग के बाद रात को 'बाबा' मानमन्दिर आये । मानमन्दिर में कीर्तन हुआ, कीर्तन में बाबा ने नृत्य किया । कीर्तन में स्थानीय गाँवों के ज्ञानीजी, ऋषिजी, तेजी और उद्धव आदि ब्रजवासी थे, जो ढोलक और ताशा आदि वाद्य बजाते थे । उस समय रासमण्डल पर बाबा इतनी तीव्र गति से नृत्य करते थे कि उनके पैर हमें धरती पर दिखाई नहीं देते थे । उस समय चिकसौली गाँव के ज्ञानीजी ढोलक बजाते थे तो उनकी अँगुलियों से खून निकलने लगता था । लगभग ११ बजे तक उस नृत्य प्रधान संकीर्तन में बाबा ने नृत्य किया, जिसमें तीन बार हम लोगों को बैठना पड़ा ।

प्रश्न – कीर्तन कितने बजे शुरू हुआ था ?

उत्तर – कीर्तन रात आठ बजे शुरू हुआ और ग्यारह बजे तक चला । वह संकीर्तन अत्यधिक आवेश युक्त था । कहना चाहिए कि वह भक्तिमय आवेश का भयंकर कीर्तन था । बाबा ने जो नृत्य किया, वह पूर्णतया अद्भुत नृत्य था । ऐसा विलक्षण संकीर्तन और ऐसा अद्भुत नृत्य हम लोगों ने अपने जीवन में आज तक कभी नहीं देखा था । उसे देखकर हम लोग बहुत प्रभावित हुए । रात को ग्यारह बजे मैंने बाबा से कहा कि महाराजजी ! अब हम लोग चलेंगे । श्रीबाबा ने कहा कि इस समय रात के ११ बजे हैं, इतनी देर रात में कैसे जाओगे ? मैंने कहा – 'बाबा ! कोई बात नहीं, नहर के किनारे टहलते-टहलते हम लोग चले जायेंगे । हमारा कोई क्या बिगाड़ेगा ?' श्रीबाबा ने कहा – 'नहीं, सुबह जाना ।' उस समय राधाकान्तजी के पिता श्रीप्रकाशजी वहीं उपस्थित थे । उन्होंने हमसे कहा – 'तुम लोग मेरे साथ घर चलो ।' श्रीबाबा ने भी सहर्ष स्वीकृति देते हुए कहा – 'हाँ, ठीक है, इनके साथ चले जाओ ।' रात साढ़े ११ बजे तक हम लोग राधाकान्तजी के घर पहुँचे । उनकी माताजी ने इतनी देर रात में भी हम लोगों के लिए भोजन बनाया । पराँठे और घी-बूरा उन्होंने हमें खाने के लिए

दिया । जाड़े का मौसम था । भोजन करने के बाद उन्होंने एक कोठरी खोलकर हमसे कहा कि इसमें सो जाओ, हवा नहीं लगेगी । रात को हम लोग आराम से उनके घर में सो गये और सुबह होते ही वापस कामाँ चले गये ।

प्रश्न – आप किस वर्ष में बाबाश्री से प्रथम बार मिले थे, उस समय आपकी आयु क्या थी और बाबा महाराज की भी अवस्था क्या थी ?

उत्तर – मैं सन् १९६९ में श्रीबाबामहाराज से प्रथम बार मिला था । मेरी आयु उस समय २२ वर्ष थी और बाबा की क्या अवस्था रही होगी, इसका तो मुझे ठीक तरह से अनुमान नहीं है लेकिन बाबा उस समय बिल्कुल युवा थे ।

अस्तु, अगला शनिवार जब आया तो मैं विमलकुण्ड की परिक्रमा लगाने जाया करता था । वहाँ भोलेरामजी भी मिल गये । उन्होंने मुझसे कहा कि आज शनिवार है, बाबा के पास मान मन्दिर चलोगे ? मैंने कहा – 'हाँ, चलो ।' हम और भोलेजी कामाँ से पैदल ही मान मन्दिर आ गये । शाम को हम लोगों ने गह्वर वन की कुटी में बाबा का सत्संग सुना । उस सत्संग में माताजी बैठती थीं । पण्डितजी, ज्ञानीजी, राधाकान्तजी, दिल्ली की ऊषाजी तथा अन्य भी श्रीबाबा के प्रेमी भक्त उस सत्संग में उपस्थित रहते थे । रात को मान मन्दिर में संकीर्तन हुआ । संकीर्तन समाप्त होने के बाद लगभग ११ बजे बाबा महाराज ब्रजवासियों की मधुकरी (भिक्षा) का प्रसाद पाने बैठे । उन्होंने मुझसे पूछा – 'प्रसाद पाओगे ?' मैंने कहा – 'बाबा ! इसीलिए तो यहाँ आये हैं ।' बाबा ने कहा – 'बैठो, मधुकरी की रोटी खाओ ।' मधुकरी में बाजरे की मोटी-मोटी रोटियाँ और शायद टमाटर या आलू की थोड़ी सी चटनी थी । मैंने और भोलेजी ने बाबा महाराज के साथ मधुकरी का पवित्र प्रसाद पाया । हम दोनों आधी से अधिक रोटी नहीं खा सके ।

आरम्भ में तो श्रीबाबा महाराज ही मधुकरी माँगने के लिए गाँवों में जाया करते थे । जब से श्रीसखीशरण महाराजजी आ गये, तो वे ही मधुकरी के लिए जाने लगे, उन्होंने बाबा को मधुकरी माँगना छुड़वा दिया । उनके बाद अन्य साधु भी मधुकरी के लिए जाते थे । कभी-कभी जब बाबा की इच्छा होती थी तो वे भी मधुकरी के लिए स्वयं ही चले जाते थे ।

इस तरह श्रीबाबा महाराज से हमारी भेंट होती रही । एक दिन मैंने श्रीबाबा से कहा – 'महाराजजी ! मैं भगवान् का भजन करना चाहता हूँ । भगवान् की कृपा कैसे मिलेगी ? आप इस बारे में कुछ हमें बताइए, मैं तो आपको ही गुरु के रूप में मानता हूँ ।' बाबा ने कहा – 'मैं तो किसी को गुरु दीक्षा देता नहीं हूँ । किसी को चेला-चेली मैं नहीं बनाता हूँ लेकिन तुम्हारी इच्छा है तो उसके अनुसार जितना भी हो सकेगा, मैं तुम्हारी साधना-उपासना में सहयोग करूँगा ।' बाबा की बात सुनकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई और फिर मैं वापस चला गया । मेरी बैंक की नौकरी थी तो अवकाश न मिलने के कारण मैं अगले शनिवार को बाबा के पास मान मन्दिर नहीं आ सका लेकिन अत्यन्त सुखद आश्चर्य यह हुआ कि दूसरे शनिवार को स्वयं बाबा महाराज कामाँ आ गये ।

प्रश्न – क्या बाबा किसी वाहन के द्वारा आये थे ? उनके साथ और कौन था ?

उत्तर – उन दिनों वाहन तो थे ही नहीं । बाबा महाराज पैदल ही बरसाना से कामाँ आये थे । उनके साथ पण्डितजी भी थे और शायद ज्ञानीजी भी थे । जिस स्टेट बैंक में मैं नौकरी करता था, पहले तो बाबा मुझसे मिलने के लिए वहाँ पहुँचे, उस दिन मेरा अवकाश था तो वे मेरे घर पर ही आ गये । उन्हें देखकर तो मैं अपने को अत्यन्त सौभाग्यशाली समझने लगा । घर में बैठकर फिर बाबा ने वहाँ हारमोनियम देखा तो उसे बजाकर एक पद गाया । वह पद इस प्रकार था – सुन्दर श्याम राधिका गोरी । कबहूँ तो अइहैं पतितन ओरी ।

दोपहर ढाई बजे बाबा मेरे घर पहुँचे थे, शाम साढ़े चार बजे तक रुके और उसके बाद वे बरसाना वापस चले गये । बाबा ने मुझसे कहा – 'आप अच्छे आदमी हैं । आप मान मन्दिर आते रहा करो ।' मैंने कहा कि मेरी बैंक की नौकरी है, जब अवकाश मिलेगा तो मैं अवश्य ही आया करूँगा ।

एक बार मैं कामाँ के कुछ लोगों को लेकर बाबा के सत्संग के लिए आया । उन लोगों ने मुझसे कहा – 'चौबेजी ! बाबाजी तो दुनिया में बहुत से हैं, उनके लिए कहाँ-कहाँ भटकोगे ? कामाँ में क्या कोई कम बाबाजी हैं, जो तुम मान मन्दिर को

जाया करते हो ?' मैंने कहा – बहुत से साधु-सन्त हैं, ये मैं भी मानता हूँ लेकिन मान मन्दिर के बाबा महाराज में एक विशेष आकर्षण है, जो अन्य महात्माओं में नहीं है और मेरे मन को शान्ति बाबा महाराज के पास ही मिलती है । मेरी बात सुनकर उन लोगों ने कहा – 'ठीक है लेकिन हम तो बाबा को सिद्ध महापुरुष तब मानेंगे जब वे यह बता दें कि त्रिकाल संध्या करने से भगवत्प्राप्ति शीघ्र होती है अथवा भगवन्नाम से शीघ्र होती है किन्तु इस प्रश्न को हम स्पष्ट रूप से बाबा से पूछेंगे नहीं और तुम भी मत पूछना । ऐसा करने से बाबा का भेद खुल जाएगा कि वे कितने पहुँचे हुए महात्मा हैं ?' मैंने कहा – 'ठीक है, जैसी तुम लोगों की इच्छा, वैसा ही करो ।' हम लोग गह्वर वन पहुँच गये और कुटी में बाबा का सत्संग हुआ । परम आश्चर्य की बात यह हुई कि सत्संग में बाबा महाराज ने हरिनाम कीर्तन और त्रिकाल संध्या के बारे में ही बताया । यह मेरे जीवन का दूसरा चमत्कार था । बाबा ने उस दिन के सत्संग में बताया कि दो साधक थे, उनमें से एक तो त्रिकाल संध्या करते थे और दूसरे कीर्तन करते थे । जो त्रिकाल संध्या करते थे, उनका समाज में बहुत अधिक प्रभाव था । जब उन दोनों का अन्तिम समय आया तो जो साधक कीर्तन करते थे, वे तो भगवान् के धाम में गये और जो त्रिकाल संध्या करते थे, उन्हें निम्न लोकों की प्राप्ति हुई । जो मेरे साथ बाबा का सत्संग सुनने आये थे, उनमें से एक तो विमल कुण्ड पर त्रिकाल संध्या करते थे । वे मुझसे कहा करते थे – 'चौबेजी ! संध्या करो । संध्या ही मुख्य साधन है । हरि नाम कीर्तन भी ठीक है किन्तु वस्तुतः हरिनाम कीर्तन में कुछ नहीं रखा है, सभी साधनों का सार तो त्रिकाल संध्या करना ही है ।' ऐसा कहने वाले व्यक्ति उस दिन बाबा के सत्संग में हमारे साथ ही आये थे । बाबा के वचन सुनकर तो उनके मष्तिष्क में सन्नाटा सा छा गया और वे मुझसे बोले – 'चौबेजी ! तुम्हारा बाबा तो सिद्ध है । यहाँ (मान मन्दिर में बाबा के सत्संग में) तो तुम भी आया करो और मुझको भी लाया करो ।'

प्रश्न – क्या आपको याद है कि उन दिनों बाबा का जो संध्याकालीन सत्संग होता था तो बाबा किस विषय पर प्रवचन किया करते थे ?

उत्तर – बाबा महाराज अधिकतर राधारानी के श्रृंगार के विषय में व्याख्यान दिया करते थे । बाबा के प्रवचन का मुख्य विषय था – राधारानी और श्यामसुन्दर के फूलों का श्रृंगार । श्रीराधारानी के बारे में ही बाबा विशेष रूप से बोला करते थे । यह लगभग सन् १९६९-७० के सत्संग की बात है । इसके बाद एक बार गर्मियों के मौसम में बाबा अकेले ही ब्रज की परिक्रमा करने गये और केवल सात दिनों में ही ब्रज चौरासी कोस की परिक्रमा लगाकर वापस आ गये । उनके हाथों में केवल एक मंजीरा था और उस मंजीरे से कीर्तन करते हुए बाबा ने ब्रज की परिक्रमा की । उस समय तक मेरा विवाह हो चुका था । मेरी धर्मपत्नी साथ में थीं । ब्रज परिक्रमा करते हुए जब बाबा कामाँ से होकर निकले तो रात को हमारे घर भी आये । उस समय बाबा ने बाहर से आवाज लगायी – 'राधे ।' बाबा की एक बार की ही 'राधे' नाम की ध्वनि सुनकर मैंने दरवाजा खोल दिया । बाबा बोले – 'अरे तुम तो जग रहे हो ।' उनकी कुछ ऐसी कृपा थी कि रात को भी मुझे भजन करने का अभ्यास उन्होंने डलवाया । बाबा जब बैठे तो मैंने देखा कि गर्मियों में नंगे पाँव परिक्रमा देने के कारण बाबा के तलवे कट गये थे, खून निकल रहा था, पैरों में बड़े-बड़े काँटे चुभे हुए थे, एड़ियाँ भी फट गयी थीं । मैंने बाबा के काँटे निकाले, घावों में क्रीम लगायी । रात को बाबा घर में रुके और फिर सुबह चार बजे वे चल दिए । इसी तरह बाबा ने दो-चार बार जब भी अकेले ब्रज परिक्रमा की तो वे कामाँ आने पर मेरे घर में आ जाते थे और मेरा यह क्रम बन गया था कि मैं हर शनिवार को मान मन्दिर बाबा महाराज का सत्संग सुनने के लिए जाता था । मैं फिरोजाबाद का रहने वाला हूँ, मेरी नौकरी कामाँ के स्टेट बैंक में लग गयी तो मैं स्थायी रूप से कामाँ में रहने लगा ।

मेरा जीवन तो बाबा के चमत्कारों से भरा पड़ा है । मेरा विवाह होने के पहले ही बाबा ने मुझसे कहा था कि यदि आप भजन करना चाहते हो तो विवाह मत करना किन्तु परिस्थितियाँ ऐसी बनीं कि जिस लड़की से मेरा विवाह होना तय हुआ, वह मेरी पत्नी की बड़ी बहन थीं, विवाह तय होने के समय ही सबसे पहले मेरे एक गुरुजी थे, उनका देहान्त हो

गया । दूसरी बार जब मैं विवाह के लिए तैयार हुआ तो मेरे पिताजी का देहान्त हो गया । तीसरी बार मैं विवाह के लिए तैयार हुआ तो मेरी पत्नी की बड़ी बहन, जिनसे विवाह तय हुआ, उनका निधन हो गया । ये राधारानी की कृपा थी, उनका मेरे लिए सन्देश था क्योंकि बाबा ने मुझसे पहले ही कह दिया था कि यदि भजन करना है तो विवाह मत करना । पिताजी की मृत्यु हो चुकी थी, एक भाई था, वह पागल था तो इस प्रकार मैं ही अकेला पुत्र था । विवाह को मैं टालता रहा लेकिन एक दिन मेरी माताजी बाबा से मिलने के लिए बरसाने आईं और उनसे अनुरोध किया कि आप मेरे बेटे से कहिये कि वह विवाह के लिए तैयार हो जाए । श्रीबाबा ने उनसे कहा कि मैं तो किसी को गृहस्थ में प्रवेश करने की सलाह नहीं देता हूँ किन्तु आपकी जैसी इच्छा हो, करो । मेरी माँ ने बाबा को सब स्थिति बताई कि मेरे पति का तो निधन हो चुका है, मेरा एक पुत्र पागल है, केवल यही योग्य पुत्र है । अब आगे क्या बात हुई, मुझे पता नहीं क्योंकि माताजी ने मेरे सामने तो बाबा से बात नहीं की थी, अलग से वह उनसे मिली थीं । कामाँ में माताजी सभी से यही कहने लगीं कि मेरा यह एकमात्र पुत्र है और यह शादी नहीं करना चाहता, साधु बनना चाहता है, दूसरा लड़का तो पागल है । अब यह विवाह नहीं करेगा तो हमारा वंश आगे कैसे चलेगा ? माताजी विवाह के लिए मेरे पीछे पड़ी रहीं लेकिन मैं इसे टालता ही गया, अंत में यह हुआ कि माताजी मेरे पीछे ज्यादा ही पड़ गयीं और मेरे संस्कार भी जागृत होने लगे तो फिर मेरा विवाह हो गया । मेरे घर में ठाकुरजी की सेवा होती थी तो मेरी धर्मपत्नी सेवा में पूरा सहयोग करती थीं । आगे श्रीबाबा से जुड़ा घटनाक्रम यह है कि एक बार मैंने बाबा से कहा कि आप अकेले ही ब्रज की परिक्रमा कर आते हैं, अबकी बार मुझे भी अपने साथ ले चलियेगा । बाबा ने कहा – 'चौबेजी ! ब्रज की परिक्रमा करना तुम्हारे बस की बात नहीं है क्योंकि मैं तो एक सप्ताह में ही पूरी ब्रज चौरासी कोस की परिक्रमा कर लेता हूँ । तुम ऐसा नहीं कर पाओगे ।' मैंने कहा – 'बाबा ! जैसे भी हो, मैं परिक्रमा कर लूँगा, आप मुझे अपने साथ ले चलिए ।' उस साल दो ज्येष्ठ माह पड़े । एक दिन बाबा मेरे घर में आये, उस समय मेरा मकान बन रहा था । पहले मैं किराए के मकान में रहता था । बाबा ने कहा कि यदि तुम ब्रज में रहना चाहते हो तो यहाँ एक मकान बनाओ । बरसाने में मकान बनाओ तो बहुत बढ़िया बात होगी । मेरी समस्या यह थी कि मेरी कामाँ के बैंक में नौकरी थी, बैंक में काम करते-करते कभी-कभी रात के आठ-नौ बज जाते, दिसम्बर के महीने में रात को १२ बजे तक काम चलता था । यही समस्या थी तो बाबा ने कहा – 'ठीक है, कामाँ में ही मकान बना लो ।' बाबा की अनुमति मिलने के बाद फिर कामा में दाऊजी के मन्दिर के पास जमीन ली, बाबा को भी उसे दिखाया और अपने हाथ से ही उन्होंने वहाँ मकान की नींव रखी । जब मकान बन गया, उसके एक दिन पहले बाबा आये और मुझसे बोले – 'चौबेजी ! मैं तो ब्रज परिक्रमा को जा रहा हूँ, मेरे साथ चलना है तो चलो ।' मैंने कहा – 'बाबा ! अभी तो मेरा मकान बन रहा है ।' बाबा ने कहा – ये सब मुझे कुछ नहीं पता, मैं तो परिक्रमा को जा रहा हूँ । मेरे साथ राधाकान्तजी के पिता प्रकाशजी, रघुवीर भगतजी, दो-चार लोग और भी हैं, इनको अपने कार्यों से अभी अवकाश मिला है, इसलिए इसी समय ये सभी ब्रज परिक्रमा को चल सकते हैं । मैंने कहा – 'ठीक है बाबा ! परिक्रमा के लिए तो मैं भी चलूँगा ।' उस समय मैंने अपने मकान का कार्य रोक दिया और घर के सदस्यों से कहा कि अभी तो मैं ब्रज परिक्रमा के लिए जा रहा हूँ । अब तो वापस लौटने पर ही मकान का काम चालू करूँगा । कामाँ से मेरे साथ भोलेरामजी, उनके छोटे भाई भी चले तथा एक मनोहर मास्टरजी भी थे, जो ब्रज के लोक गीतों के प्रसिद्ध गायक थे, उनकी पत्नी और उनका पुत्र विजय, जो आजकल प्रसिद्ध गायक कलाकार भी है, उनका बड़ा भाई – ये सब लोग चले । बाबा ने मुझसे कहा कि खाने-पीने के लिए तुम एक हलवाई की व्यवस्था कर लेना । मैंने कहा – 'ठीक है ।' तम्बू-तनात के लिए मैंने कामाँ के एक ब्राह्मण बालक को तैयार कर लिया । सुबह चार बजे परिक्रमा शुरू हो जाती और दस बजे अगले पड़ाव पर विश्राम होता । दोपहर को बारह-एक बजे प्रसाद बनता था । एक ही समय प्रसाद की व्यवस्था होती थी । उस यात्रा में लगभग १५० यात्री थे । मेरी पत्नी ने भी वह यात्रा की थी । यह १९८८ की पहली यात्रा थी, उसकी कुछ व्यवस्था मेरे हाथ में भी थी । पण्डितजी तब अध्यापक थे । राधाकान्तजी उस परिक्रमा में थे । वह यात्रा चालीस दिनों की थी । उस यात्रा में बड़ा

चमत्कार हुआ । चौबीस घंटे तो अखण्ड कीर्तन हुआ करता था । यात्रा रुकने के लिए जगह नहीं मिलती थी । नन्दगाँव के रमेश गोस्वामीजी स्कूलों में यात्रा के रुकने की व्यवस्था किया करते थे । शेषशायी पहुँचे तो कहीं भी रहने के लिए जगह नहीं मिली । हम लोग तब रात भर पेड़ों के नीचे ही पड़े रहे । पेड़ों के नीचे ही डेरा डाला गया । खण्डार के नित्यानन्द बाबा भी उस यात्रा में थे । उनके परिकरों में सीताराम नाम के एक भक्त थे, वे बहुत अच्छे सेवक थे । परिक्रमा में चलने वाले सभी यात्रियों के पाँव में रात भर वे तेल लगाया करते थे, उनके साथ एक अन्य भक्त सभी यात्रियों को पंखे से हवा करते थे, सभी के पाँव दबाते थे । मैंने अपने जीवन में ऐसी सेवा करने वाले आज तक कभी नहीं देखे । दिन में ब्रज की इतनी बड़ी परिक्रमा करना और फिर रात में सबकी सेवा करना । पहली यात्रा में १५० से २०० यात्री थे । दूसरी यात्रा में ३०० यात्री थे ।

कथा-कीर्तन के चमत्कार

यात्रा का सबसे बड़ा चमत्कार यह हुआ कि एक वृद्धा ८०-८५ वर्ष की थी, वह यात्रा में आगे-आगे चलती थी, फलाहार करती थी । वह बीमार हो गयी और उसकी मृत्यु हो गयी । उसके अन्तिम संस्कार के लिए सभी आवश्यक सामग्री एकत्रित कर ली गयी थी । जब बाबा महाराज को उसकी मृत्यु के बारे में बताया गया तो उन्होंने कहा – 'कुछ नहीं, केवल कीर्तन करो ।' बाबा की आज्ञा से सभी ने घनघोर कीर्तन किया और उस कीर्तन का नेतृत्त्व बाबा महाराज ने किया । बाबा ने ऐसे करुण भाव और करुण स्वर से कीर्तन किया कि उसके अमोघ प्रभाव से वह वृद्धा, जिसको लकड़ियों पर अग्नि संस्कार के लिए लिटा दिया गया था, वह जीवित हो गयी और फिर उसने शेष परिक्रमा पूरी की । यह एक अद्वितीय चमत्कार था । मैं तो आरम्भ से ही श्रीबाबा के साथ इसीलिए जुड़ा क्योंकि मैंने उनके बहुत से अद्भुत चमत्कार पहले ही देख लिए थे ।

बाबा की माताजी भी विलक्षण सन्त थीं । बाबा जैसे सिद्ध कोटि के महापुरुष जिनके पुत्र हों, वे कोई साधारण महिला तो हो नहीं सकती हैं । हमारे मकान में बाबा की माताजी भी कई बार बाबा के साथ आ चुकी हैं । माताजी रात को ढाई बजे जग जाती थीं । वे शौच के लिए शौचालय में नहीं जाती थीं, लोटा लेकर ब्रह्म मुहूर्त में ही वन में जाती थीं । किसी को जल के लिए लोटा भी नहीं लाने देती थीं, स्वयं ही लोटे में जल भरकर बाहर जाती थीं । सुबह ३ से ३.३० तक तो गह्वर वन की कुटी में उनका भजन का आसन लग जाता था । दिन में दस बजे तक एक आसन पर बैठकर वे भजन करती थीं । इसके बाद स्वयं अपने हाथों से ही वे प्रसाद बनाती थीं । कभी-कभी उनके हाथ का बनाया प्रसाद हमें भी खाने को मिल जाता था । माताजी का स्नेह मुझ पर, मेरी पत्नी और मेरे बच्चों पर सदा ही बना रहा । मेरे बच्चों की जब गर्मियों की छुट्टी होती थी तो वे मान मन्दिर में बाबा के पास ही रहा करते थे ।

उन दिनों जब बाबा महाराज कथा कहते थे तो उसकी रिकॉर्डिंग नहीं होती थी क्योंकि उस ज़माने में आजकल की तरह रिकॉर्डिंग के साधन उपलब्ध नहीं थे ।

प्रश्न – १९८५ में जो बाबा महाराज ने गह्वर वन में भागवत सप्ताह कथा कही थी, उसके आप ही यजमान थे, उस कथा के बारे में थोड़ा बताइए ।

उत्तर – मेरे पिताजी का सन् १९७२ में देहान्त हो गया था तो मैंने बाबा से कहा था – 'महाराजजी ! मेरे पिताजी के उपलक्ष्य में आप भागवत सप्ताह कथा कह दीजिये ।' बाबा ने कहा कि मैं तो कहीं भागवत कहने जाता नहीं हूँ । मैंने कहा कि आप यदि बाहर नहीं जाते तो मैं ही यहाँ आ जाऊँगा, आप यहाँ ही गह्वर वन में भागवत सप्ताह कथा कह दीजियेगा । पहले तो बाबा भागवत कथा कहने के लिए बहुत देर तक मना करते रहे । इसके पहले बाबा ने मौनी बाबा के नित्य धाम गमन के उपलक्ष्य में गह्वर वन में भागवत सप्ताह कथा कही थी । उसके पहले एक और भागवत कथा बाबा ने गोवर्धन में कही थी तथा एक भागवत कथा ऊँचा गाँव के सन्त ब्रह्मचारीजी के कहने पर ऊँचा गाँव में कही थी । मैंने बाबा से कहा कि महाराजजी ! एक भागवत सप्ताह कथा मेरे पिताजी के लिए भी यहीं गह्वर वन में कर दीजिये, जिससे

कि उनका भी उद्धार हो जाए । बाबा ने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली । गह्वर वन में राधा सरोवर के किनारे एक पेड़ के नीचे बाबा के लिए एक तखत लगाकर आसन लगा दिया गया । गह्वर वन में पहले शठकोप बाबा की जहाँ कुटिया थी, उसके सामने एक पेड़ था, उसके नीचे ही तखत डालकर बाबा के लिए व्यासासन बनाया गया था । श्रोता लोग राधा सरोवर के चारों ओर बैठकर कथा सुना करते थे । उस कथा का बड़ा चमत्कार हुआ । मैं कामाँ में अपने पुराने घर गया और अपने सभी पूर्वजों से वहाँ प्रार्थना की कि मैं गह्वर वन में बाबा महाराज से भागवत कथा करवाने जा रहा हूँ, आप लोग भी उस कथा में पधारिये । कथा से एक दिन पहले मैं बाबा के पास औपचारिकता के रूप में गया था, कथा वाचन हेतु विधिवत् रूप से प्रार्थना करने, जब उसी दिन घर लौटकर आया तो मेरे घर के सामने स्थित पीपल के पेड़ में एकदम से वायु का सञ्चार हुआ । मैं चारपाई पर लेटा था, बगल में मेरी पत्नी लेटी थीं, इतने में एक वायु का झोंका आया मेरे सिर की ओर और पैर की तरफ जाकर टकराया तो मैंने क्या देखा कि मेरी एक भाभी थीं, जिनकी आग से जलकर मृत्यु हो चुकी थी, उनको मैंने सामने खड़ा हुआ देखा । मैंने अपनी पत्नी से कहा – 'अरे देखो, प्रेमा आई हैं ।' दुबारा जब मुझे नींद आ गयी तो उसी समय पीपल के पत्ते खड़खड़ाये और हवा का झोंका आया और उसमें मुझे छोटे चाचाजी दिखाई दिए । मैंने फिर अपनी पत्नी से कहा – 'देखो, चाचाजी आये हैं ।' पत्नी ने कहा – 'मुझे सो लेने दो, सुबह मुझे ट्रैक्टर में सामान रखकर बरसाना जाना है ।' इसके बाद अपने परिवार के ही एक तीसरे व्यक्ति भी मुझे दिखायी दिए । मैंने अपने ताऊजी की पुत्री (बहन) और उनके पति (बहनोई) से भी कह दिया था कि आप लोग गह्वर वन में कथा में अवश्य ही आना । उन्होंने भी कह दिया कि ठीक है, अवश्य ही आयेंगे । आश्चर्य है, उनको अपने घर में सपना दिखा, सपने में हमारे मृतक चाचाजी उनको दिखाई दिए और उन्होंने गह्वर वन पहुँचने का सारा रास्ता स्वप्न में ही बता दिया कि बरसाने में एक पुलिस थाना है, वहाँ से एक रास्ता साँकरी खोर को जाता है, वहाँ से निकलकर जाओगे तो एक पहाड़ मिलेगा, वहाँ गह्वर वन है, उस वन में एक कुण्ड है, उसके तट पर ही बाबा महाराज की भागवत कथा हो रही है । वह बहुत अच्छा स्थान है और तुम लोग अवश्य ही वहाँ बाबा महाराज से कथा सुनने के लिए जाओ । स्वप्न में चाचाजी के द्वारा कथा स्थल का मार्ग बताये जाने पर बहन-बहनोई बरसाना आये और उनको गह्वर वन जाने के मार्ग के बारे में किसी से पूछने की भी आवश्यकता नहीं पड़ी । वे यहाँ रुके और उन्होंने बाबा महाराज के मुख से सात दिन की सम्पूर्ण भागवत कथा श्रवण की । उस कथा की मैंने रिकॉर्डिंग भी की थी और बाद में मान मन्दिर में ब्रजराजजी को रिकॉर्डिंग के सभी कैसेट सौंप दिए थे ।

बाबा की माताजी हर वर्ष बाबा के जन्म दिन पर स्वयं प्रसाद बनाकर मौनी बाबा को पवाने के लिए उनकी कुटिया पर जाती थीं । उस समय मैं भी यहाँ उपस्थित रहता था और माताजी का सहयोग करता था क्योंकि गह्वर वन में बन्दर बहुत रहते हैं । मौनी बाबा की कुटिया इतनी छोटी थी कि कोई उसमें पैर पसारकर सो नहीं सकता था । माताजी मौनी बाबा की कुटिया पर प्रसाद लेकर जातीं और कहतीं – 'बाबा ! ये प्रसाद ले लो ।' मौनी बाबा किसी और से तो बिलकुल नहीं बोलते थे किन्तु माताजी से बोल लिया करते थे । माताजी द्वारा प्रसाद ग्रहण करने के अनुरोध पर वे पूछते थे – 'क्या है, इसकी मुझे क्या जरूरत है ?' माताजी बतातीं कि आज मेरे बेटे रमेश का जन्म दिन है । मौनी बाबा तब बाबा महाराज के लिए आशीर्वाद के रूप में कहते थे – 'बहुत बड़ा होगा, वह बहुत बड़ा होगा ।' एक धातु का डिब्बा उनके पास था, जो भी प्रसाद माताजी लाती थीं, वे कहते – 'इसी में सब डाल दो ।' उसी डिब्बे में वे पूड़ी-कचौड़ी, सब्जी, खीर आदि सब पदार्थ एक साथ डलवा लेते थे ।

उनका नित्य धाम गमन भी बड़े आश्चर्यजनक ढंग से हुआ । उनके शरीर में अपने-आप ही अग्नि प्रकट हो गयी थी । श्रीबाबा महाराज ने ही उनका अन्तिम संस्कार किया था ।

बाबा के बारे में मेरा यही अनुभव रहा है कि वे सबके मन की बात जानने वाले, अन्तर्यामी हैं क्योंकि मैं जो कुछ मन में सोचता था, उसी बात को बाबा कह दिया करते थे । केवल मुझे ही नहीं बल्कि मेरे साथ मान मन्दिर आने वाले लोगों

का भी यही अनुभव रहा है और इसी कारण से बाबा के प्रति उनके अन्दर श्रद्धा-विश्वास उत्पन्न हुआ । वस्तुतः भजन करने में तो कोई बाबा महाराज का मुकाबला ही नहीं कर सकता है । रात को कीर्तन में तीन घन्टे तक लगातार अत्यधिक तीव्र गति से वे नृत्य किया करते थे । चैतन्य महाप्रभु और मीराबाई के बाद वर्तमान काल में इतनी अधिक नृत्य आराधना किसी भी उच्च कोटि के सन्त-महापुरुष के जीवन में नहीं दिखाई दी । मान मन्दिर के जिस रास मण्डल पर बाबा नृत्य करते थे, वह कंक्रीट का बना हुआ और टूटा था, इतनी देर और अतिशय आवेश युक्त नृत्य करने के कारण बाबा के पैर छिल जाते थे, उनसे खून बहने लगता था ।

बाबा के कीर्तन से चिकसौली और मानपुर गाँवों के लोग अकारण ही द्वेष किया करते थे । एक बार एकादशी के दिन मैं राधाकान्तजी के घर में रुका था । उनके यहाँ चौक में कीर्तन हो रहा था । गाँव के कुछ लोग बोले कि ये क्या ऊधम हो रहा है और ऐसा कहकर वे पत्थर फेंकने लगे । उस समय हम लोग किनारे-किनारे बैठते थे, इसके बाद उनके घर में बरामदा बना, उसमें बैठकर कीर्तन होता था । अत्यधिक विरोध के बावजूद भी राधाकान्तजी के पिता श्रीप्रकाशजी और उनके पूरे परिवार ने बाबा के कीर्तन में बहुत सहयोग किया । गाँव के लोग तो बाबा को मान मन्दिर से भगाना चाहते थे । इन लोगों ने बाबा के कीर्तन में, बाबा के कार्यों में विघ्न तो बहुत डाला, बाबा को जान से भी मारने का प्रयास किया, उपद्रव तो बहुत अधिक किया किन्तु वे अपने कुत्सित उद्देश्य में सफल नहीं हो सके, बाबा का बाल भी बाँका नहीं कर सके । शुरू में जो डाकू मान मन्दिर में रहता था, उसने बाबा को मान मन्दिर से हटाने का बहुत प्रयास किया, बन्दूक दिखाकर जान से मारने की धमकी दी लेकिन बाबा ने भी पूरी निर्भयता के साथ उससे कह दिया कि मैं तो यहाँ से जाऊँगा नहीं, तुमको जो करना है, करके देख लो ।

जब मैं मान मन्दिर आता था तो बाबा यहाँ दोपहर में भी कथा कहते थे, कभी रामायण कहते, कभी किसी अन्य ग्रन्थ से कथा करते । बाबा का सारा जीवन कथा और कीर्तन में ही व्यतीत हुआ । सुबह भी मान मन्दिर में बाबा की कुटिया के सामने कीर्तन होता था । दोपहर ढाई बजे बाबा कथा कहते थे, समय के अनुसार कभी रामायण तो कभी गीता से कथा कहते थे । मान बिहारी लाल को कथा सुनाते थे । मान मन्दिर में एक-दो साधु ही तब रहते थे । गाँव से भी गिने-चुने लोग ही कथा सुनने आते थे । राधाकान्तजी के माता-पिता भी कथा में आते थे । बाबा की स्मरण शक्ति बहुत अच्छी है । किसी भी ग्रन्थ से पूछ लो, चाहे गीता हो, रामायण हो, भागवत हो अथवा सनातन धर्म से सम्बन्धित कोई भी ग्रन्थ हो, किसी सम्प्रदाय का ग्रन्थ हो, महापुरुषों की वाणी हो, बाबा को सभी का अच्छा-खासा ज्ञान है । उनकी मेधा शक्ति बहुत परिपक्व है । राधा-माधव की बाबा पर पूर्ण कृपा है ।

उस समय मान मन्दिर में बाबा द्वारा निर्धारित किया आध्यात्मिक कार्यक्रम इस प्रकार था – सुबह भक्त बाबा की कुटिया के सामने छत पर कीर्तन करते थे । दोपहर को बाबा कथा कहते थे । शाम को गह्वर वन की कुटी में कथा करते थे । रात को आठ बजे से ग्यारह बजे तक मान मन्दिर में जोरदार कीर्तन होता था । रात ग्यारह बजे के बाद बाबा प्रसाद पाते थे । जब हम लोग कामाँ से मान मन्दिर रुकते तो तखत पर तो बाबा सोते थे, तखत के नीचे की भूमि गाय के गोबर से लिपी होती थी । मानगढ़ में टाट के गद्दे में धान का प्यार भरा जाता था । बाबा कहते थे कि 'चौबेजी ! हमारे पास तो यही है ।' हम लोग उन्हीं धान के प्यार भरे टाट के गद्दों पर सोते थे, वही गद्दे बैठने के लिए उपलब्ध होते थे । जाड़े के मौसम में वे ही रजाई की तरह ओढ़ने के लिए प्रयोग किये जाते थे ।

प्रश्न – आपके समय में ही गह्वर वन की रक्षा हेतु बाबा के द्वारा प्रयत्न किया गया, उसके बारे में थोड़ा बताइए ।

उत्तर – उस समय गह्वर वन बहुत घना जंगल था । स्थानीय गाँवों के लोग गह्वर वन के पेड़ों को काटने के लिए आया करते थे । बाबा उनको गह्वर वन की महिमा बताकर यहाँ के पेड़ों को काटने से रोका करते थे । आगे चलकर इसमें बड़े-बड़े लोग शामिल हो गये, बाहर के लोग भी सहयोग करने लगे, सरकार की ओर से भी गह्वर वन को काटने पर रोक लग गयी । मुकद्दमा भी चला, पण्डितजी कोर्ट-कचहरी में जाया करते थे । पण्डितजी ने इसमें बहुत सहयोग किया ।

पण्डितजी के पूरे परिवार, उनके माता-पिता ने, कमलाजी ने बाबा के कार्यों में बहुत सहयोग किया । पण्डितजी ने तो अपनी सम्पूर्ण आय (धनराशि) ही मान मन्दिर के लिए समर्पित कर दी । राधाकान्तजी भी अपनी सारी आय मान मन्दिर के लिए समर्पित कर दिया करते थे । ऐसा ही राधाकान्तजी के पिताजी भी किया करते थे । राधाकान्तजी के परिवार का भी बाबा के कार्यों में पूरा सहयोग रहता था । पण्डितजी और राधाकान्तजी – इन दोनों के ही दिव्य परिवार हैं । पण्डितजी के परिवार में पण्डितजी ने विवाह नहीं किया, उनकी दोनों बहनें विवाहित जीवन से दूर रहीं । पण्डितजी की दोनों भतीजियाँ मुरली और श्रीजी भी दिव्य बालिकायें हैं, ये दोनों ही भागवत व्यास हैं । प्रकाशजी के भी परिवार में राधाकान्तजी ने विवाह नहीं किया, उनके छोटे भाई गिरधर ने भी विवाह नहीं किया । सबसे छोटे भाई अम्बरीषजी गृहस्थ में होकर भी अपने घर में नहीं रहते, मान मन्दिर में ही रहते हैं, नौकरी करते हैं तो अपना सारा वेतन मान मन्दिर की सेवा में समर्पित कर देते हैं, मान मन्दिर की सेवा में वे तन-मन-धन से व्यस्त रहते हैं । इन लोगों ने बहुत त्याग किया है और बहुत कष्ट सहे हैं । अम्बरीषजी की पुत्री गौरी भी भागवत व्यास है, निष्काम भाव से वह कथा कहती है और कथा में प्राप्त हुई सम्पूर्ण धनराशि बाबा महाराज को समर्पित कर देती है । वह भी बाबा के सिद्धान्तों का पालन करने वाली आदर्श कन्या है ।

पल काटो सही इन नैनन के, गिरधारी बिना पल अंत निहारें ।
जीभ कटै न भजे नंदनंदन, बुद्धि कटै हरिनाम बिसारैं ।
शीश नवै ब्रजराज बिना, वहि शीशहि काटि कुवा किन डारैं ।
'मीरा' कहै जरि जाउ हियौ, पद कंज बिना मन औरहि धारैं ।।

परम मंगलमय 'संत-संकल्प'

प्रश्न – राधाष्टमी और रंगीली होली पर मान मन्दिर में जो संगीत के कार्यक्रम होते हैं, आपके समय में उनका क्या स्वरूप था ?

उत्तर – पहले तो ये कार्यक्रम इतने बड़े स्तर पर नहीं होते थे । आगे जब नृसिंहदासबाबा और कोसी के मदनमोहनजी आदि आ गये तो उनके गायन के कारण, राधाष्टमी और होली के कार्यक्रम में बाहर से अन्य भी बहुत से गायक कलाकार आने लगे और इस तरह फिर इन कार्यक्रमों में लोगों की भीड़ बढ़ती चली गयी । अपने प्रारम्भिक दिनों में तो केवल दस-बीस लोग ही राधाष्टमी-होली के कार्यक्रम में उपस्थित रहा करते थे । उस समय बाबा गाते थे, नृसिंहदासजी गाते थे, कामा के भोलेजी भी गाते थे । सबसे बड़ी बात यह थी कि उन दिनों माइक का प्रबन्ध नहीं होता था । श्रीबाबा महाराज जब राधाष्टमी-रंगीली होली पर गाते थे तो बिना माइक के ही गाते थे किन्तु उनकी आवाज इतनी बुलन्द थी कि दूर तक सबको सुनाई देती थी । पहले तो बाबा जब कुटी में कथा कहते थे, तब भी माइक की व्यवस्था नहीं होती थी । मान मन्दिर में जो प्रतिदिन रात को कीर्तन होता था, उसमें भी माइक की व्यवस्था नहीं होती थी ।

प्रश्न – बाबा महाराज के बारे में अन्य भी अपने संस्मरण बताइए ।

उत्तर – सबसे बड़ी बात यह है कि हमारे मन में कोई भी शंका उठती थी और हम जब कामाँ से मान मन्दिर आते तो बिना हमारे कहे ही बाबा उसी शंका का समाधान कर दिया करते थे । हमारे जीवन में श्रीबाबा का सबसे बड़ा चमत्कार तो यही है ।

प्रश्न – १९८५ में बाबा महाराज ने जो भागवत सप्ताह कथा गह्वर वन में की थी तो कितनी देर तक बाबा कथा किया करते थे ?

उत्तर- हम श्रोता लोग तैयार होकर नहीं आ पाते थे, उसके पहले ही बाबा आ जाते थे और व्यासासन पर विराजमान हो जाते थे । सुबह आठ बजे बाबा कथा कहना प्रारम्भ कर देते थे और सूर्यास्त तक कथा होती थी, बीच में केवल आधे घंटे

के लिए बाबा कथा को विराम देते थे । बाबा ने ऐसी भागवत सप्ताह कथा कही, जैसी आज तक किसी ने भी नहीं कही होगी । भागवत का कोई भी प्रसंग बाबा ने नहीं छोड़ा । राधा रानी की जन्म बधाई की कथा तो बाबा दो दिनों तक कहते रहे । मेरे छोटे भाई ने सम्पूर्ण कथा की रिकॉर्डिंग की थी ।

वास्तविकता यह है कि जिस तरह से मान मन्दिर का विकास हुआ है, उसके मूल में बाबा महाराज के भजन का चमत्कार तो अन्धे को भी दिखाई दे जाएगा । मेरे सामने ही माताजी गौशाला बाबा महाराज के द्वारा केवल चार-पाँच गायों के साथ स्थापित की गयी । बाबा ने इन गायों की आरती उतारी थी और कहा था कि देखो, श्रीजी पधार रही हैं । बाबा ने गौशाला के प्रबन्धकों से कहा था कि ईमानदारी से गौ सेवा करोगे तो यह भारत की सबसे बड़ी गोशाला बन जायेगी । गौसेवा के निमित्त जो भी द्रव्य आये, उसको केवल गौ सेवा में ही लगाना, यहाँ तक कि यह भी मत सोचो कि यह भी परमार्थ का कार्य है, अतः गो सेवा के लिए आये धन को किसी अन्य पारमार्थिक कार्य में खर्च कर दें । गायों के लिए आया धन गौसेवा में ही खर्च होगा तो आप लोग देखना कि उससे गौसेवा का कितना अधिक विस्तार होगा और वास्तव में बाबा महाराज की ही आज्ञा का पालन होने से माताजी गौशाला ने अभूतपूर्व प्रगति की है और ऐसी गौशाला भारतवर्ष में कहीं नहीं है, जहाँ इतने बढ़िया ढंग से गौवंश की सेवा हो रही है । इसके पीछे मुख्य रूप से बाबा महाराज का ही प्रताप है ।

प्रश्न – ब्रज के पर्वतों का व्यापक रूप से खान माफियाओं के द्वारा जो खनन किया गया, भगवान् श्रीराधा-माधव की लीला-स्थलियों के प्रमुख अंग इन पर्वतों को जिस तरह से नष्ट किया जा रहा था और इनकी रक्षा के सम्बन्ध में श्रीबाबा महाराज के द्वारा जो ऐतिहासिक आन्दोलन किया गया, उसके विषय में संक्षेप में बताइए ।

उत्तर – पर्वतों का खनन तो बाबा के ब्रज में आने के बाद आरम्भ हुआ है । इसके बाद इनकी रक्षा हेतु बाबा ने भी बहुत बड़ा अभियान छेड़ दिया था । पहली बार तो सुनहरा से जो अष्टसखी पर्वतों की श्रृंखला है, उनके संरक्षण के लिए बाबा स्वयं सात दिन के धरने पर बैठे थे । उस धरने में अखण्ड रूप से कीर्तन भी होता रहता था । कीर्तन तो बाबा महाराज का एक बहुत बड़ा अस्त्र है, जो उनके प्रत्येक कार्यक्रम में सदा से ही होता रहा है । जब मान मन्दिर की राधारानी ब्रज यात्रा प्रति वर्ष ब्रज परिक्रमा करती हुई कामाँ क्षेत्र में पहुँचती थी तो बाबा वहाँ के निवासियों को ब्रज के पर्वतों की महिमा बताते हुए इनके संरक्षण के लिए प्रेरित किया करते थे, इस कारण से जो लोग पर्वतों के खनन में लगे हुए थे, वे बाबा से शत्रुता करने लगे किन्तु अधिक संख्या में तो वहाँ के लोग बाबा के प्रति श्रद्धालु थे, उन्होंने बाबा के आन्दोलन में बहुत सहयोग किया । खनन माफिया और उनके समर्थकों ने तो बाबा को जान से मारने तक के बहुत से कुत्सित प्रयास किये । एक बार तो जब बाबा की ब्रजयात्रा कामाँ आई और विमल कुण्ड के किनारे मैदान में दो दिन तक उसका पड़ाव रहा तो मैंने और बठैन के रामा पण्डितजी ने देखा कि कुछ लोग सड़क पर पिस्तौल लेकर बैठे हुए थे । ऐसा देखकर हम लोग तो घबरा गये । बाबा ने तो कुछ नहीं कहा किन्तु इन बदमाशों से लड़ने के लिए दस लड़कों को बुलाकर तो मैं ले आया, वे सभी हथियारों से लैस थे और बीस-पच्चीस लड़के रामा पण्डितजी ले आये । वे लोग दो दिनों तक कामाँ के पड़ाव में बाबा की सुरक्षा में लगे रहे और जब यात्रा बरसाने के लिए चल दी तो कामाँ से बरसाने की पीली पोखर तक भी वे नवयुवक बाबा महाराज की सुरक्षा हेतु साथ-साथ ही आये । २००९ की यात्रा में तो बाबा महाराज स्वयं ब्रजयात्रा के दो दिवसीय कामाँ पड़ाव में आमरण अनशन करके धरने पर बैठ गये कि जब तक ब्रज के पर्वतों का खनन नहीं बन्द होगा, मैं अन्न-जल नहीं ग्रहण करूँगा । बाबा को अनशन करते देख बिना कहे ही हजारों ब्रजयात्री और मान मन्दिर के छोटे-छोटे बच्चे भी अनशन करके धरने पर बैठ गये । बाबा महाराज के आमरण अनशन से राजस्थान सरकार हिल गयी और १२ घंटे के भीतर ही रात को बारह बजे राजस्थान के तत्कालीन मुख्य मंत्री अशोक गहलोत ने बाबा से फोन पर बात की और प्रार्थना की – 'महाराजजी ! आप अपना अनशन समाप्त कर दीजिये । आपकी माँग को हम स्वीकार करते हैं और मैं स्वयं आपको आश्वस्त करता हूँ कि डीग एवं कामाँ तहसील में जो भी व्यापक खनन हो रहा है, उस पर स्थायी

रूप से प्रतिबन्ध लगा दिया जाएगा ।' मुख्य मन्त्री द्वारा इस प्रकार आश्वासन देने पर बाबा महाराज ने उनसे कहा कि आप इसी बात को हमारे यात्रियों से भी कहो, जो हजारों की संख्या में अन्न-जल का त्याग करके मेरे साथ धरने पर बैठे हैं । मुख्य मंत्री के फोन को माइक से जोड़ दिया गया और फिर उन्होंने सभी ब्रजयात्रियों को भी अनशन तोड़ने की प्रार्थना की और आश्वासन दिया कि ब्रज के पर्वतों पर हो रहे खनन को पूर्ण रूप से रोक दिया जाएगा । मुख्यमंत्री की बात को सुनकर पूरे यात्रा पाण्डाल में आनन्द की सरिता प्रवाहित होने लगी । रात को बारह बजे थे, लगभग पंद्रह हजार से अधिक यात्री थे, यात्रा में अखण्ड कीर्तन तो सतत हो ही रहा था, अब तो उस कीर्तन में सभी यात्री परमानन्द में डूबकर नृत्य करने लगे । यह एक बहुत ही ऐतिहासिक विजय थी, जिन खान माफियाओं ने धन के बल पर सरकार, कोर्ट के जज, सारे प्रशासनिक अधिकारियों और पुलिस विभाग को खरीद लिया था, जो पूरी तरह से इनको सहयोग करते हुए खनन के प्रति आँख बंदकर बैठे थे, आधी रात को सभी सरकारी कार्यालय खुलवाकर खनन माफियाओं के खनन के विशाल पट्टे स्थायी रूप से निरस्त कर दिए गये । यह बाबा महाराज और उनके समर्थकों की खनन माफियाओं और पूरे सरकारी तन्त्र के विरुद्ध बहुत बड़ी क्रान्तिकारी विजय थी, जिसके कारण श्रीराधा-माधव की दिव्य लीलाओं के साक्षी ब्रज के पर्वतों का विनाश पूर्ण रूप से रुक गया और स्थायी रूप से उनका संरक्षण हो सका ।

प्रश्न – कामाँ के प्रसिद्ध 'गया कुण्ड' का जिस तरह बाबा महाराज के प्रयास से जीर्णोद्धार हुआ, उसके बारे में आप बताएँ ।

उत्तर – पण्डितजी प्रति वर्ष कामाँ में विमल कुण्ड के किनारे भागवत सप्ताह कथा करते थे, उनकी कथा तो पूर्णतया निष्काम होती है, फिर भी कामाँ के श्रद्धालु भक्त दक्षिणा के लिए जो धन देते थे, हर साल पण्डितजी उस धन को स्वयं न ग्रहणकर कामा के तीर्थों के जीर्णोद्धार के लिए ही छोड़ देते थे । पचास हजार रुपये स्वयं बाबा महाराज ने दिए थे । इस तरह श्रीबाबा महाराज की कृपा से कामाँ के अत्यधिक महत्वपूर्ण सरोवर 'गया कुण्ड' का जीर्णोद्धार हो गया ।

आदि बद्री के पर्वतों का संरक्षण हो गया । मान मन्दिर से लेकर डभारा गाँव तक विस्तृत गह्वर वन का संरक्षण हो गया । रंगदेवी महासखी के डभारा गाँव के प्रसिद्ध लीला स्थल रत्न कुण्ड, नौबारी-चौबारी एवं श्याम शिला संरक्षित हो गये । ये तो बहुत बड़े दैवी चमत्कार हैं । ऐसे विलक्षण कार्यों को आज तक न कोई कर पाया और न भविष्य में कोई कर पायेगा । ये सब तो केवल बाबा महाराज की तपस्या का प्रभाव है । राधारानी की बाबा पर असीम कृपा है । ब्रज की बहुमूल्य धरोहरों को बचाने के लिए उन्होंने अपने जीवन-प्राणों तक को दाँव पर लगा दिया । यूँ ही सामान्य रूप से ब्रज की लीला स्थलियों का पुनरुद्धार नहीं हुआ है । इसको कहते हैं उत्कट भजन अर्थात् जी तोड़कर बाबा ने जो भजन किया, यह सब उसी का परिणाम है । ऐसी ही बाबा की माताजी थीं । उनके जैसा भजनपरायण भक्त मैंने अपने जीवन में आज तक नहीं देखा । दिन-रात वे भजन करती रहती थीं । ब्रह्म मुहूर्त में ढाई-तीन बजे जागकर वे भजन करने बैठ जाती थीं और सुबह दस बजे तक एक ही आसन पर बैठकर भजन किया करती थीं, फिर सारी दोपहर भजन करतीं और देर रात तक उनका भजन चलता रहता था । ऐसी उत्कट भजन परायण माँ वे थीं, बड़ी ही तपस्विनी थीं, तभी तो बाबाश्री जैसे सिद्ध महापुरुष उनको पुत्र रूप में प्राप्त हुए, अन्यथा क्या बाबा महाराज जैसा अद्वितीय पुत्र किसी साधारण स्त्री के हो सकता है ?

बाबा ने भी अपने घर के लिए कुछ नहीं किया, सब कुछ छोड़कर बरसाना में आ गये । जहाँ बाबा का जन्म हुआ, जहाँ वे सोलह वर्ष तक रहे, उनका वह मकान आज भी टूटा-फूटा खण्डहर जैसा पड़ा है । प्रायः लोग सोचते हैं कि हम अपने घर को बढ़िया बना लें, परिवार की भौतिक उन्नति के लिए कुछ करें किन्तु बाबा ने अपनी जन्म भूमि प्रयाग में जो कुछ छोड़ दिया, पीछे मुड़कर फिर कभी उसे नहीं देखा । उनकी माताजी और उनकी दीदीजी भी अपने मकान, अपनी सारी सम्पत्ति को छोड़कर ब्रज में चली आयीं । बाबा की दीदी कानपुर में लड़कियों के कॉलेज की वरिष्ठ प्रोफ़ेसर थीं, सेवा निवृत्ति के बाद भी उनको ३५ हजार रुपये मासिक पेंशन मिलती थी किन्तु उन्होंने भी अपनी सन्तानों के प्रति आसक्ति का पूर्ण त्याग करके सारा धन मान मन्दिर के सन्तों-साध्वियों की सेवा में समर्पित कर

दिया । दीदीजी की भी मेरे ऊपर बड़ी कृपा थी, वे मेरे घर भी कई बार आ चुकी हैं । जब भी मिलतीं, मुझसे और मेरे पारिवारिक सदस्यों से बड़े स्नेह से बात करती थीं । उनके हाथ का बना प्रसाद भी मैंने पाया है ।

आरम्भ में मैं बाबा के दर्शन करने कामाँ से मान मन्दिर पैदल ही आया करता था, उसके बाद फिर साइकिल से आने लगा था और अब तो बाबा ने मुझे सपत्नीक स्थायी रूप से मान मन्दिर में रहने को कह दिया तथा इसका प्रबन्ध भी करवा दिया है ।

सच्चे संत का आत्मिक प्रेम

भामिनीशरणजी द्वारा लिखित श्रीबाबामहाराज की परम कृपामयी जीवनी के संस्मरण (१५/६/२०२४)

मुझे प्रयाग में रहते समय बहुत बाद में बी. ए. की पढ़ाई के अध्ययनकाल में श्रीबाबा महाराज के बारे में पता चला । वहाँ निम्बार्क सम्प्रदाय के वर्तमान काल में जो महन्त हैं स्वामी राधामाधवदासजीमहाराज, इनका पूर्व का नाम था 'श्यामेश', मानमन्दिर में श्रीबाबामहाराज उन्हें इसी नाम से पुकारते हैं । उनसे पूर्व उनके पिता स्वामी राधाकृष्णदासजीमहाराज प्रयाग में 'निम्बार्क आश्रम' के महन्त थे । उन्होंने ही अपने सुपुत्र श्रीश्यामेशजी को बाबामहाराज के पास संस्कृत-व्याकरण और श्रीमद्भागवत का अध्ययन करने के लिए रखा था । एक बार सन् १९९१ में जब श्यामेशजी बरसाना से प्रयाग आये थे और अपने आश्रम में ही थे, उसी समय मुझे उनके आश्रम में पहली बार जाने का अवसर मिला और तभी उनके मुख से पहली बार मुझे बाबामहाराज के बारे में पता चला । उन्होंने मुझे बताया कि प्रयाग में जन्मे सन्त श्रीरमेशबाबामहाराजजी इस समय बरसाना में अखण्ड ब्रजवास करते हैं । वे श्रीराधारानी के अनन्य उपासक, प्रकाण्ड विद्वान् और उत्कट त्याग-वैराग्य से सम्पन्न हैं । उनके जैसा सन्त तो सम्पूर्ण भारत वर्ष में कोई नहीं है । तदनन्तर श्यामेशजी के पिता पूज्य डॉ.श्रीराधाकृष्णदासमहाराजजी ने भी बाबा महाराज के बारे में मुझे विस्तार से बताया । वे प्रत्येक माह ब्रज जाया करते थे तो एक दिन मान मन्दिर में भी रुकते थे और श्रीबाबा के सत्संग का लाभ उठाते थे । वे प्रयाग लौटने पर अपने आश्रम में प्रायः बाबा महाराज के बारे में बताया करते थे कि वे कितने अधिक विद्वान् हैं, श्रीजी के अनन्य भक्त हैं । कभी-कभी वे यह भी बताते कि इस बार मैं मान मन्दिर गया तो बाबा महाराज वहाँ भक्तों को संगीत भी सिखाते हैं, यहाँ तक कि नृत्य करना भी सिखाते हैं कि कैसे नृत्य किया जाता है ? उनके मुख से बारम्बार बाबा महाराज की महिमा सुनकर मेरी भी अभिलाषा होती थी उनके दर्शन करने की । एक दिन उन महाराजजी से मैंने कहा कि आप मुझे भी एक बार बरसाने में बाबा महाराज के दर्शन करवा दीजिये तो उन्होंने कहा कि इस बार की रंगीली होली के पर्व पर मैं तुमको बरसाना ले चलूँगा, वहाँ बाबा महाराज के दर्शन कर लेना । श्रीजी की विशेष कृपा से वह समय आया और सन् १९९२ की रंगीली होली के महोत्सव पर स्वामीजी मुझे बरसाना लेकर आये, फिर मान मन्दिर में मुझे श्रीबाबा महाराज का पहली बार दर्शन हुआ । उस समय मान मन्दिर में रंगीली के पर्व पर भक्तों की भीड़ जुटी थी और कई गायक कलाकर होली के गीत गा रहे थे और नृत्य करने वाले नृत्य कर रहे थे । एक तखत पर बाबा महाराज आसीन थे और सबके गाने के बाद अंत में उन्होंने राधा-माधव की होली लीला का बहुत ही रसमय गीत गाया । कार्यक्रम के समापन के पश्चात् स्वामीजी ने बाबा महाराज से मुझे मिलवाया और उनसे यह कहा कि यह लड़का मेरे आश्रम में आता है किन्तु इसके पिताजी बहुत चिन्तित रहते हैं कि इनके संग में कहीं यह भक्ति में ही लीन हो गया तो आगे इसका जीवन निर्वाह कैसे होगा ? उनकी बात सुनकर बाबा महाराज ने मुझसे कहा कि अपने पिताजी से कह देना कि भगवान् की भक्ति करने से कोई हानि नहीं होती है और भजन करने वाले का योगक्षेम स्वयं भगवान् ही वहन करते हैं । दोपहर के बाद फिर रात को गह्वर वन स्थित कुटी में पद गान हुआ, उसमें भी ब्रजवासियों ने होली के गीत गाये और सबके अन्त में श्री बाबा महाराज

ने होली लीला का पद गाया । अगले दिन सुबह मान मन्दिर में रहने वाले भक्त श्रीबाबा महाराज के कमरे के समक्ष गये, उन्होंने सूरदासजी का एक पद गाया और अंत में सभी बाबा के कमरे में गये और उन्हें प्रणाम किया, तब बाबाश्री ने सूरदासजी के पद का अर्थ उन्हें समझाया । दोपहर तक हम लोग मान मन्दिर में रुककर फिर उसी दिन वापस चले गये । पहली बार मैंने गह्वर वन की, मान मन्दिर की अलौकिक छटा का दर्शन किया और बाबा महाराज के सानिध्य का लाभ उठाया, तभी से मन में यह प्रबल लालसा उत्पन्न हुई कि भविष्य में मुझे इसी स्थान पर सदा के लिए वास करना है । प्रयाग आने पर भी मान मन्दिर की और श्रीबाबा महाराज की स्मृति सदा बनी रहती थी । बीच-बीच में दो-तीन बार मान मन्दिर आने का अवसर मिला, उस समय केवल बाबा महाराज का दर्शन करके ही लौट जाते थे । एक बार पिताजी के साथ वृन्दावन आये तो उनके साथ मान मन्दिर में आकर बाबा महाराज के कमरे में उनका दर्शन किया । मेरे पिताजी मेरे भविष्य को लेकर बहुत चिन्तित रहा करते थे क्योंकि उस समय आध्यात्मिक जीवन की ओर मेरा अधिक झुकाव हो गया था और पढ़ने-लिखने में मेरा मन नहीं लगता था । पिताजी ने बाबा महाराज से कहा कि मेरे चार पुत्र हैं, यह सबसे छोटा है । तीन पुत्र तो शिक्षा पूर्ण करके नौकरी करते हैं लेकिन इसका तो पढ़ने से मन ही हट चुका है, केवल भजन करता है, कोई नौकरी आदि जीविकोपार्जन का कार्य भी नहीं करना चाहता, ऐसी स्थिति में इसका भविष्य में क्या होगा, क्या यह भीख माँगेगा ? पिताजी की बात सुनकर बाबा महाराज ने उन्हें समझाते हुए कहा कि यदि आपका बेटा भजन करना चाहता है तो फिर आपको इसके भविष्य की चिन्ता नहीं करना चाहिए क्योंकि भजन करने वाले के योगक्षेम का वहन तो स्वयं भगवान् ही करते हैं किन्तु मोह ग्रसित पिता के ऊपर श्रीबाबा के समझाने का प्रभाव नहीं हुआ और वे मेरे भविष्य के प्रति सदा चिन्तित ही रहा करते थे । प्रयाग में कुछ भक्तों का समूह था, वे लोग परस्पर सत्संग करते थे, भगवान् की चर्चा किया करते थे । पिताजी भी उनके सत्संग से जुड़े थे । एक बार उन सभी भक्तों ने एक बस के द्वारा प्रयाग से ब्रज दर्शन करने का कार्यक्रम बनाया तो १५-२० गृहस्थ भक्त बस के द्वारा वृन्दावन आये और फिर बरसाना में भी आये । उन सभी को मैं मान मन्दिर में श्रीबाबा महाराज के कमरे में दर्शन कराने के लिए ले आया । दोपहर का समय था, पहले तो मैं अकेले ही बाबा के कमरे में उनका दर्शन करने गया । उस समय वे अपने कमरे में कौपीन पहनकर माला से भजन कर रहे थे । मैंने बाबा से पूछा कि प्रयाग से कुछ भक्त आपका दर्शन करने के लिए आये हैं, क्या उन्हें आपके पास ले आऊँ ? श्रीबाबा ने तुरन्त ही उन सभी को अपने कमरे में लाने की अनुमति दे दी । मेरे पिताजी सहित सभी भक्त बाबा के कमरे में आये और उनका दर्शन करके कृतार्थ हो गये । श्रीबाबा ने उनसे उनका परिचय पूछा तो उन लोगों ने बताया कि हम लोग प्रयाग में लूकर गंज में रहते हैं, हम लोगों की कीर्तन मण्डली भी है, हम आपस में सत्संग भी करते हैं । श्रीबाबा ने उन भक्तों से कहा कि पहले प्रयाग में रहते समय मैं भी लूकर गंज में कीर्तन करने जाता था । इन भक्तों में जो अच्छा कीर्तन करना जानते थे, श्रीबाबा ने अपने कमरे में ही हारमोनियम देकर उनसे कहा कि आप लोग कुछ भगवान् का यश गाइए तो कुछ भक्तों ने भजन गाकर सुनाये । मेरे पिताजी ने भी एक भजन गाया । सबका कीर्तन सुनकर श्रीबाबा ने कहा कि मैं समझ गया, तुम लोग अच्छे साधक हो । इन सभी भक्तों ने श्रीबाबा से अनुरोध किया कि महाराजजी ! आप भी कुछ गाकर सुनाइए । मेरे पिताजी को शास्त्रीय संगीत में अधिक रुचि थे और उन्हें पता था कि श्रीबाबा को शास्त्रीय संगीत का बढ़िया ज्ञान है तो उन्होंने कहा – 'महाराजजी ! थोड़ा शास्त्रीय संगीत सुना दीजिये ।' उनकी बात सुनकर बाबा महाराज ने कहा कि शास्त्रीय संगीत बड़ी चीज नहीं है, बड़ी चीज है श्रीजी की कृपा । इसके बाद उन्होंने यह भी कहा कि मान मन्दिर से अक्टूबर के महीने में दशहरे के बाद त्रयोदशी तिथि से ब्रज चौरासी कोस की परिक्रमा होती है, तुम लोग भी अवश्य ही उस यात्रा में आओ । एक महिला भक्त ने कहा – 'महाराजजी ! श्रीजी जब कृपा करेंगी, तभी आना सम्भव हो सकेगा ।' श्रीबाबा ने कहा – 'अरे ! श्रीजी निःशुल्क ब्रज परिक्रमा कराती हैं, किसी से एक पैसा भी नहीं लिया जाता, इससे अधिक श्रीजी की और कृपा क्या हो सकतीहै ? अब उसमें आने के लिए तो तुम्हें

समय निकालना ही चाहिए । इसके लिए भी समय न निकाल सको तो फिर श्रीजी क्या करें ?' अन्त में सभी लोग बाबा महाराज को प्रणाम करके चले गये । यह १९९५ की घटना थी, इसके बाद १९९६ में मान मन्दिर से ब्रजयात्रा होने वाली थी तो मैंने निश्चय किया कि इस ब्रजयात्रा में मैं तो हर हालत में आऊँगा और घर से अकेले ही उस यात्रा में भाग लेने बरसाना आ गया । पहले दिन की यात्रा ब्रह्माचल पर्वत के शिखरों का दर्शन करके अपने पड़ाव स्थल पर रुकी थी । अधिक यात्री नहीं थे, अतः रस मन्दिर में जहाँ रासेश्वरी विद्यालय है, उसी घेर में तब यात्रा रुकी थी । मैं पहुँचा और बाबा महाराज को प्रणाम किया । श्रीबाबा महाराज के सानिध्य में यह मेरी पहली ब्रजयात्रा थी । चालीस दिन की इस यात्रा ने तो मेरे नीरस जीवन में शुष्क हृदय को अद्भुत रस से सराबोर कर दिया । चौबीस घंटे का शास्त्रीय संगीत की धुनों पर आधारित रसमय अखण्ड कीर्तन और श्रीबाबा महाराज का संध्या काल का सत्संग यात्रा का प्राण था । उस समय बाबा महाराज शाम के सत्संग में बहुत ही ओजस्वी प्रवचन किया करते थे । पद यात्रा में चलते समय बीच-बीच में श्रीबाबा किसी स्थान पर रुकते और राधा-कृष्ण की मधुर लीलाओं का बहुत मधुर रसिया गाते थे, उनके रसमय गान को सुनकर हजारों लोग नृत्य करने लगते थे । इससे उनके चलने की थकावट मिट जाती थी और फिर वे नई ऊर्जा से ओतप्रोत होकर अपने गन्तव्य के लिए चल देते थे । ब्रजयात्रा में बाबा के सत्संग और युगल मन्त्र के रसमय कीर्तन ने मेरे मन पर एक ऐसा अभूतपूर्व संस्कार सृजित कर दिया, जो कभी समाप्त नहीं हो सकता और जिसके कारण आगे चलकर मुझे श्रीबाबा के सानिध्य में मान मन्दिर में अखण्ड ब्रजवास प्राप्त हुआ । १९९६ की इस यात्रा की समाप्ति के बाद फिर १९९८ में पुनः चालीस दिन की यात्रा की और उसके बाद तो मुझे प्रयाग में रहना अच्छा ही नहीं लगता था । प्रयाग में रहते समय एक संस्था जो एक वैष्णव सम्प्रदाय के अन्तर्गत है, वहाँ से मैंने गुरु दीक्षा ग्रहण कर ली थी किन्तु वहाँ बहुत ही अधिक साम्प्रदायिक संकीर्णता थी, अखण्ड ब्रजवास के वे लोग विरोधी थे, जबकि मेरी योजना तो भविष्य में ब्रजभूमि में ही वास करने की थी । ब्रजवास के विरोध में इस संस्था के उपदेशक जो सिद्धान्त बताते थे तो श्रीबाबा से मैंने इस सम्बन्ध में प्रश्न किया तो उन्होंने मुझे उसी सम्प्रदाय के आचार्य श्री प्रबोधानन्द जी के ब्रज-वृन्दावन धाम की अनुपम महिमा से युक्त ग्रन्थ वृन्दावन महिमामृत शतक दिखाया, जिसमें ब्रजवास करने की अगाध महिमा का वर्णन किया गया है और ऐसे समस्त कुतर्क जो आजकल के साम्प्रदायिक लोगों ने फैला रखे हैं कि ब्रजवास तो केवल शुद्ध भक्त ही कर सकते हैं, साधारण लोग यदि ब्रजवास करेंगे तो उनके द्वारा अपराध होगा और उनका पतन हो जाएगा, इसलिए उन्हें तो ब्रज का केवल दर्शन करके अपने स्थान पर लौट आना चाहिए, ऐसे समस्त नकारात्मक विचारों का वृन्दावन शतककार श्री प्रबोधानन्दजी ने दृढता से खण्डन किया है । श्रीबाबा महाराज के इस मार्गदर्शन से मुझे पता चला कि ये संस्थायें जो दुनिया भर में कृष्ण भक्ति का दम्भ करती हैं, इनके उपदेष्टा गुरु लोग अपने निहित स्वार्थों के कारण किस प्रकार अपने ही सम्प्रदाय के मूल आचार्यों के सिद्धान्तों से विपरीत चलकर समाज को विशुद्ध भक्तिपथ से भ्रष्ट करने में लगे हैं । श्रीबाबा महाराज के उद्बोधन से ही मुझे इन सम्प्रदायों और इनके गुरुओं के खोखलेपन के बारे में पता चला । श्रीबाबा की मेरे ऊपर बड़ी कृपा थी, जबकि अभी मैंने मान मन्दिर में अखण्डवास भी नहीं किया था किन्तु एक बार यहाँ आने पर उन्होंने मुझसे कहा कि तुम बहुत मूर्ख हो जो तुमने अमुक स्थान से गुरु दीक्षा ग्रहण की है, जबकि कोई कहीं से गुरु दीक्षा ले, किसी भी सम्प्रदाय से जुड़ा हो, श्रीबाबा इस बारे में किसी से कुछ नहीं कहते किन्तु यह उनकी मेरे ऊपर बहुत विशेष कृपा थी, जो उन्होंने मुझे निष्काम व विशुद्ध भक्ति के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी । उस संस्था और सम्प्रदाय की बहुत सी विकृतियों के बारे में जब श्रीबाबा ने मुझे बताया तो सहसा मुझे विश्वास नहीं हुआ किन्तु उनके मन्दिरों में रहने पर मुझे श्रीबाबा की बताई बात पर शत-प्रतिशत विश्वास हो गया और फिर तो इस तरह की संस्थाओं और सम्प्रदायों से मेरा पूरी तह मोह भंग हो गया और मैंने दृढ निश्चय कर लिया कि अब तो मुझे श्रीबाबा के आश्रय में श्रीजी के मान भवन में ही जीवन बिताना है । इसी प्रकार अखण्ड ब्रजवास के मेरे मार्ग एक अन्य बाधा थी माँ की आसक्ति, कई बार मैं यह सोचकर प्रयाग से यहाँ आया कि अबकी बार मैं बरसाना वास करूँगा किन्तु मेरी माँ मेरे बिना बहुत दुखी रहती थीं और

इसीलिए मुझे वापस घर लौटना पड़ता था । इस सन्दर्भ में जब श्रीबाबा से बात की तो उन्होंने बताया कि प्रियजनों, परिवारी जनों के निकट रहने पर आसक्ति बढ़ती है, इनसे दूर रहने पर ही आसक्ति नष्ट होती है । श्रीबाबा के ऐसा समझाने पर आगे चलकर १९९९ की राधारानी ब्रजयात्रा के पश्चात् मुझे मान मन्दिर का वास मिल गया ।

ब्रजप्रेम-प्रदर्शक 'बाबाश्री'

सन् १९९९ की ब्रजयात्रा में एक बहुत ही विशेष घटना घटी, जिससे श्रीबाबा के दिव्य शील गुण, उनकी अनन्त दया-कृपा, क्षमाशीलता और उनकी अद्वितीय महिमा का पता चलता है । ब्रज में तब पर्वतों का व्यापक रूप से खनन होना प्रारम्भ हो गया था और श्रीबाबा महाराज ने ब्रज के पर्वतों की रक्षा का आन्दोलन छेड़ दिया था । इस बात से खनन माफिया श्रीबाबा से इतना क्रुद्ध हो गये कि वे उनको जान से मारने तक का प्रयास करने लगे थे । इस यात्रा में ऐसा ही हुआ । राधारानी ब्रजयात्रा माँट गाँव से होकर अपने पड़ाव स्थल भाण्डीर वन की ओर जा रही थी । माँट एक छोटा-सा क़स्बा है । वहाँ यात्रा का स्वागत हो रहा था । माँट में ही एक गोशाला है, जिसका संचालक एक नागा साधु था । खनन माफियाओं ने उस नागा को धन दिया था बाबाश्री को विष देने के लिए, वह धन के लोभ में आ गया और हजारों यात्रियों के बीच में श्रीबाबा का स्वागत करने आया और उनसे बोला – 'महाराज ! यह लीजिये त्रिवेणी संगम का जल ।' ऐसा कहकर उसने बाबा को तीक्ष्ण विष मिश्रित जल दे दिया । श्रीबाबा ने उसे त्रिवेणी संगम का ही जल समझकर सहज भाव से मुख में डाल लिया किन्तु उसका स्वाद बहुत ही कड़वा था, प्रयाग के निवासी श्रीबाबा ने सोचा कि यह कैसा तीक्ष्ण स्वाद का त्रिवेणी का जल है । उन्हें यह समझते देर नहीं लगी कि यह तो विष है, इस नागा के द्वारा मेरी हत्या का प्रयास किया गया है, फिर भी यहाँ श्रीबाबा की अद्भुत क्षमाशीलता और अभूतपूर्व करुणा का उदाहरण देखिये कि श्रीबाबा ने उस जहर देने वाले नागा साधु पर दया करते हुए, उसके हित के लिए चुपचाप उसके कान में कहा कि 'महाराज ! आप तुरन्त ही यहाँ से चले जाइए, नहीं तो लोग नाराज होकर आपको मार डालेंगे ।' श्रीबाबा को अपने प्राणों की कोई चिन्ता नहीं थी कि मुझे इतना तीक्ष्ण विष दिया गया तो मेरा क्या होगा अपितु वे तो अपनी हत्या के लक्ष्य से आये अपने हत्यारे की सुरक्षा के प्रयास में लगे थे और यह भी उनके भजन का विलक्षण प्रताप था कि भयंकर विष मीराबाई की तरह उनका बाल भी बाँका नहीं कर पाया । श्रीबाबा के कहने से वह नागा तुरन्त ही वहाँ से पलायन कर गया किन्तु अपने स्थान पर जाकर उसने विचार किया कि इतना भयंकर विष मैंने जिनको दिया, उनके शरीर पर इसका किंचित् भी प्रभाव नहीं पड़ा और इसके विपरीत उन्होंने तो मेरी रक्षा के लिए तुरन्त ही मुझे वहाँ से हटा दिया, अन्यथा उनकी यात्रा में उपस्थित हजारों यात्री तुरन्त ही मेरे प्राणों की बलि ले लेते । अरे, वे कोई साधारण सन्त नहीं, बहुत उच्च कोटि के महापुरुष हैं, मैंने उन्हें विष देने का जो भयंकर अपराध किया, उसके मार्जन हेतु मुझे यात्रा के पड़ाव पर जाकर तत्काल ही उनसे क्षमायाचना करनी चाहिए । इस प्रकार से अपने मन में विचार-विमर्श करके वह नागा साधु यात्रा के पड़ाव स्थल भाण्डीर वन में आया । उसके आने की सूचना मिलने पर श्रीबाबा के प्रेमी ब्रजवासियों ने कहा कि जिसने हमारे परम पूज्य गुरुदेव श्रीबाबा को विष देकर मारने का प्रयास किया, वह यहाँ आया तो हम लोग इसको छोड़ेंगे नहीं, अच्छी तरह इसकी पिटाई करेंगे । जब श्रीबाबा महाराज को इस बात का पता चला तो उन्होंने अपने प्रेमी अनुयायियों से कहा – 'उस नागा साधु को आने दो, उसे अपने अपराध का पश्चात्ताप हो गया है, उसके विरुद्ध कोई भी कठोर कदम उठाना तो दूर, यदि तुम लोगों ने उससे कुछ कटु वचन भी कहे तो मैं कभी तुम लोगों से बात नहीं करूँगा ।' श्रीबाबा के ऐसा कहने पर नागा के विरुद्ध कठोर व्यवहार करने का किसी का साहस नहीं हुआ । यह घटना मैंने अपनी आँखों से देखी कि संध्याकाल को भाण्डीर वन के पड़ाव में वह नागा साधु आया, वह बिलकुल दिगम्बर था, उसने श्रीबाबा से अपने अपराध के लिए क्षमा माँगी, परम करुणासिन्धु महापुरुष ने उसको सहर्ष क्षमा ही नहीं किया,

अपितु दोनों हाथों को उठाकर उसको आशीर्वाद भी दिया । श्रीबाबा की ऐसी अहैतुकी दयालुता को देखकर उसके दोनों नेत्रों से अश्रुधारा प्रवाहित हो रही थी ।

इस यात्रा की समाप्ति के बाद ही मुझे बाबा महाराज की कृपा से मान मन्दिर में वास करने का देव दुर्लभ सौभाग्य प्राप्त हुआ । इसी यात्रा में चार-पाँच अन्य नवयुवकों को भी मान मन्दिर वास का सौभाग्य मिला । हम सभी लोग अखण्ड ब्रजवास हेतु श्रीबाबा का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए मान मन्दिर में उनके कक्ष में पहुँचे तो श्रीबाबा ने कहा कि ब्रजवास तो इतना दुर्लभ है कि लाखों वर्षों की तपस्या से भी इसकी प्राप्ति नहीं हो सकती । तुम लोगों ने यात्रा में मिलकर श्रद्धा के साथ जो सेवा की, उसी के प्रभाव से तुम्हें ब्रजवास की उपलब्धि हो रही है । श्रीबाबा ने यह भी कहा कि यह श्रीराधारानी की ब्रजयात्रा है, अतः इस यात्रा में जो कोई भी निष्ठा के साथ सेवा करता है, श्रीजी की कृपा से उसको ब्रजवास की प्राप्ति हो जाती है । बहुत से लोगों को इस यात्रा में सेवा करने के प्रभाव से ब्रजवास मिला है । इसके बाद श्रीबाबा ने हम लोगों को मान मन्दिर में वास करने की समुचित विधि बताई । उन्होंने कहा – 'तुम लोगों को श्रीजी की कृपा से ब्रजवास तो मिल गया किन्तु यदि तुम अपने ब्रजवास को सफल बनाना चाहते हो तो यहाँ से थोड़ी दूर स्थित महासखी रंगदेवी के गाँव डभारा में कीर्तन करते हुए मधुकरी (भिक्षा) माँगने जाया करो ।'

श्रीबाबा की यह हार्दिक अभिलाषा रहती है कि मान मन्दिर में रहने वाले साधुगण ब्रजवासियों की भिक्षा का शुद्ध अन्न ग्रहण करें लेकिन केवल भिक्षा ही न माँगे क्योंकि यह तो केवल स्वार्थ है, श्रीबाबा का मत है कि अपना पेट तो एक कुत्ता भी भर लेता है । जो ब्रजवासी हमें रोटी देते हैं, हमारा उदर-पोषण करते हैं, बदले में हमें भी उनकी सेवा करनी चाहिए और ब्रजवासियों की सबसे बड़ी सेवा है भगवन्नाम का दान अर्थात् उनको नाम कीर्तन सुनाना ही उनकी सबसे बड़ी सेवा है । इसलिए श्रीबाबा चाहते हैं कि साधु लोग एक साथ मिलकर कीर्तन करते हुए ब्रजवासियों के घरों से मधुकरी ग्रहण करें । हमें स्वार्थी नहीं बनना चाहिए, हम समाज से केवल लेने में, अपनी स्वार्थ पूर्ति में ही न लगे रहें, अपितु समाज को कुछ दें । श्रीबाबा ने ऐसा स्वयं अपने आचरण के द्वारा करके दिखाया है । जब से बाबा ब्रज में आये और मान मन्दिर में रहना प्रारम्भ किया तो वे निकटस्थ गाँवों चिकसौली और मानपुर में भिक्षा के लिए जाते तो कीर्तन करते हुए जाते थे । उन्हें कीर्तन करते देखकर प्रत्येक घर की मातायें-बहनें भी कीर्तन करने लगीं । बाबा जैसे ही कीर्तन करते हुए गाँव में मधुकरी हेतु प्रवेश करते, घर-घर में ब्रजदेवियाँ पहले से ही कीर्तन करने लगती थीं । इस प्रकार श्रीबाबा के मधुकरी माँगने से इन गाँवों के घर-घर में कीर्तन प्रारम्भ हो गया, जो आज तक जारी है । श्रीबाबा ने हम लोगों को यह भी बताया कि मेरे गुरुदेव श्रीप्रियाशरणबाबामहाराज ने मुझे ब्रज के गाँवों में भिक्षा माँगने की यह विधि बताई थी कि जब अपने स्थान से मधुकरी के लिए चलो तो सर्वप्रथम ठाकुरजी को प्रणाम करो, तदनन्तर यह मत सोचो कि हम गाँव में मधुकरी के लिए जा रहे हैं, बल्कि यह भावना करो कि हम श्रीजी के निकुंज भवन में भिक्षा ग्रहण करने जा रहे हैं और भिक्षा देने वाली ब्रज की स्त्रियों को साधारण स्त्री मत समझो, अपितु यह भावना करो कि निकुंज भवन में हम जा रहे हैं तो श्रीजी की सहचरियों के द्वारा हमें भिक्षा प्राप्त होगी और उनके द्वारा भिक्षा में रूखा-सूखा जो भी मिले, सन्तुष्ट मन से ग्रहण कर लो । कभी कुछ न मिले तो असंतुष्ट मत हो, इसके साथ ही जिह्वा के लोलुप मत बनो । यह मत चाहो कि हमें भिक्षा में दूध मिल जाए, सब्जी मिले अथवा अन्य स्वादिष्ट पदार्थ मिलें क्योंकि भिक्षा का उद्देश्य पेट भरना, जिह्वा की तृप्ति करना नहीं है । भिक्षा माँगने का मुख्य लक्ष्य तो यह है कि भगवत्प्राप्ति में बाधक समस्त अनर्थों की जड़ है अहंकार, इस अहंकार को दूर करने के लिए ही शास्त्रों में साधुओं के लिए भिक्षा माँगने का विधान किया गया है, पेट भरने अथवा स्वादेन्द्रिय की तृप्ति के लिए भिक्षा नहीं माँगी जाती है । श्रीबाबा जब मानपुर गाँव में भिक्षा के लिए जाते तो इस गाँव में बारहों महीने बाजरे की रोटी मिलती थी क्योंकि गेंहूँ तब नहीं उत्पन्न होता था । बाबा महाराज रोटी के अतिरिक्त किसी घर से कभी भी छाछ, दूध अथवा साग नहीं माँगते थे । ठाकुरजी को अर्पित करके सूखी मोटी बाजरे की रोटी को नमक-मिर्च के साथ खाया करते थे । कभी-कभी बाबा अन्य गाँवों में भी भिक्षा हेतु जाते तो वहाँ साधुओं को दूध-दही-मक्खन और घी भी

मिलता था किन्तु उन गाँवों में भी बाबा रोटी के अतिरिक्त और कुछ नहीं ग्रहण करते थे । श्रीबाबा ने बताया कि मेरे गुरुदेव ने मुझसे कहा था कि मेरी बताई विधि से तुम यदि भिक्षा माँगोगे तो बारह वर्षों में सिद्ध हो जाओगे । भिक्षा की सबसे बड़ी विशेषता भगवन्नाम का दान करना जो बाबा ने सिखाया और स्वयं आचरण में किया, ऐसा तो जितने भी प्राचीनकाल के सन्तों ने भिक्षा माँगकर ब्रज में भजन किया, उनकी रहनी में भी ऐसा प्रसंग पढ़ने-सुनने को नहीं मिलता कि उन्होंने कीर्तन करते हुए ब्रजवासियों के यहाँ से भिक्षा ग्रहण की हो । यह तो श्रीबाबामहाराज ने 'संकीर्तन करते हुए मधुकरी माँगने' की सर्वाधिक महत्वपूर्ण व ब्रजभूमि की वास्तविक रसोपासना का प्रचार-प्रसार किया । इससे भिक्षुक के मन से स्वार्थ परायणता का नाश होता है और ब्रजवासियों के प्रति उसके हृदय में कृतज्ञता का भाव जागृत होता है कि जो ब्रजवासी हमारे अन्नदाता व अति उदार हैं, हमें भी भगवन्नाम का दान करके बदले में उनकी सेवा करनी चाहिए । श्रीबाबा ने भगवन्नाम दान के सम्बन्ध में मुझे पद्म पुराण का एक श्लोक बताया – "गोकोटि दानं गृहणेषु काशी माघे प्रयागे यदि कल्पवासी । यज्ञायुतं मेरुसुवर्णदानं गोविन्द नाम्ना न भवेत् च तुल्यम् ॥" इस श्लोक का भाव है कि सूर्यग्रहण अथवा चन्द्रग्रहण के समय काशी में करोड़ों गायों का दान किया जाए किन्तु वह 'गोविन्द' के एक नाम के दान की बराबर नहीं हो सकता । माघ के महीने में प्रयाग में कल्पवास किया जाए, वह भी 'गोविन्द' के एक नाम के बराबर नहीं है । सैकड़ों-हजारों अश्वमेध यज्ञ भी गोविन्द के एक नाम के दान के बराबर नहीं हैं, इसी प्रकार सोने के सुमेरु पर्वत का दान भी गोविन्द के एक नाम के दान के बराबर नहीं है । गोविन्द के नाम का दान कैसे होता है ? यह होता है कीर्तन के द्वारा, जब हम कीर्तन करते हुए भिक्षा में जाते हैं अथवा नगर कीर्तन करते हैं तो इसमें उच्च स्वर से जो भगवन्नाम का उच्चारण किया जाता है, उसको सभी प्राणी सुनते हैं और नाम में वह शक्ति है कि उसके श्रवण मात्र से मनुष्य ही नहीं बल्कि पशु-पक्षी, पेड़-पौधे जैसे जड़-चेतन सभी जीवों के पाप नष्ट होते हैं और भव बन्धन से उनकी मुक्ति होती है, जो अन्य किसी भी साधन से सम्भव नहीं है । श्रीबाबा ने यह श्लोक और इसका अर्थ बताकर कहा कि इस श्लोक को रट लो, जिससे तुमको भगवन्नाम दान की महिमा का ज्ञान रहेगा और फिर तुम निष्ठा के साथ मधुकरी करते हुए भगवन्नाम का दान करते रहोगे । श्रीबाबा की आज्ञा का पालन करते हुए हम लोग डभारा गाँव में प्रतिदिन कीर्तन करते हुए मधुकरी माँगते, इससे ब्रजवासी भी बहुत प्रसन्न होते और श्रीबाबा महाराज को भी अपार प्रसन्नता होती थी ।

श्रीबाबा महाराज के द्वारा ब्रज धाम की सेवा का जो अभियान प्रारम्भ किया गया था, उसमें ब्रज के पर्वतों की रक्षा, वनों की रक्षा के साथ ही ब्रज के सरोवरों की रक्षा की भी एक प्रमुख योजना थी । श्रीबाबा गह्वर वन के ही राधा सरोवर के शोधन का कार्य स्वयं ही मान मन्दिर के कीर्तन में आने वाले ब्रजवासियों के साथ किया करते थे । उसके बाद जब बाबा ने ब्रज चौरासी कोस की यात्रा का शुभारम्भ किया तो उन्होंने ब्रज के सभी कुण्डों की दुर्दशा देखी । इस सम्बन्ध में वे स्थानीय गाँवों के ब्रजवासियों को उनके स्थान के सरोवरों की महिमा बताकर उसकी सफाई और सुरक्षा के सम्बन्ध में प्रेरित करते रहते थे । कोसी में गोमती गंगा का बहुत महत्व है, इसकी दुर्दशा को देखकर बाबा प्रति वर्ष यात्रा के दौरान वहाँ के निवासियों को इसके जीर्णोद्धार की प्रेरणा दिया करते थे, इसका महत्त्व बताते थे और वहाँ के प्रभावशाली लोगों की उन्होंने एक समिति बनवायी । इस सरोवर पर कुछ प्रभावशाली असामाजिक लोगों का कब्जा हो चुका था । सर्वप्रथम उस कब्जे से मुक्त हुए बिना गोमती गंगा का जीर्णोद्धार नहीं हो सकता था तो इस असम्भव से लगने वाले कार्य को सम्भव करने के लिए श्रीबाबा ने मान मन्दिर के सन्तों को गोमती गंगा के शोधन के लक्ष्य से वहीँ रहते हुए अखण्ड कीर्तन करने के लिए भेजा क्योंकि उनका यह सुदृढ़ विश्वास है कि कलियुग की विकराल समस्याओं का एकमात्र निदान भगवन्नाम कीर्तन ही है । मान मन्दिर में वास करते समय कुछ दिनों के पश्चात् सन् २००० में श्रीबाबा ने मुझसे और अन्य साधुओं से कहा कि तुम लोग धाम सेवा के लक्ष्य से कुछ दिन कोसी में रहकर कीर्तन करो । श्रीबाबा की आज्ञा से हम लोग कोसी में गोमती गंगा के तट पर स्थित भगवती मन्दिर में रहकर कीर्तन करने लगे । श्रीबाबा महाराज का कहना था कि वहाँ भी रहकर तुम लोग ब्रजवासियों के घरों से कीर्तन करते हुए भिक्षा माँगना । श्रीबाबा की इस आज्ञा का पालन किया

गया । समाज कल्याण के लिए श्रीबाबा के द्वारा चलाया गया एक अन्य महत्वपूर्ण कार्यक्रम है प्रभात फेरी करना । उनकी प्रेरणा से कोसी नगर में प्रातःकाल दस प्रभात फेरियाँ चलने लगीं । सभी प्रभात फेरी करने वालों को श्रीबाबा महाराज की ओर से निःशुल्क ढोलक और माइक उपलब्ध कराये गये, जिनके माध्यम से प्रभात फेरी के द्वारा नाम संकीर्तन का दूर-दूर तक प्रचार हुआ और कोसी में संकीर्तन की धूम मच गयी । इसी प्रकार भगवती मन्दिर में गोमती गंगा के उद्धार के लक्ष्य से जो अखण्ड कीर्तन श्रीबाबा के द्वारा चलाया गया, उसमें भी कोसी के ब्रजवासियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया और इस तरह नाम संकीर्तन के माध्यम से गोमती गंगा के पुनरुद्धार के सम्बन्ध में सबसे बड़े विघ्न शक्तिशाली लोगों के अवैध कब्जे हटाये गये और आगे चलकर गोमती गंगा जो कि गटर गंगा बन चुकी थी, सारे शहर के गंदे नालों का मल-मूत्र जिसमें जमा होता था, उसका पूर्ण रूप से शोधन हो गया । नाम संकीर्तन के माध्यम से किस प्रकार धाम सेवा का अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य सफल हो सकता है, इसे श्रीबाबा ने अर्थ के अभाव में बिना किसी से धन की याचना किये ही प्रत्यक्ष करके दिखा दिया ।

कोसी में कीर्तन करते समय ही मेरे घर प्रयाग से बार-बार पत्र और फोन के द्वारा सूचना मिलती रही कि माताजी की हालत चिन्ताजनक हो गयी है, तुम शीघ्र ही घर वापस आ जाओ । जब बार-बार घर से फोन आने लगा तो मुझे कोसी से बरसाना मान मन्दिर आना पड़ा । यहाँ भी फोन आता रहा । कुछ लोगों ने मुझसे कहा कि तुम अपने घर चले जाओ, अपनी माँ से मिल आओ, उसके बाद यहाँ आना किन्तु मेरी घर जाने की बिल्कुल इच्छा नहीं थी । एक बार मैं स्वयं श्रीबाबा के कमरे में गया और उनसे इस बारे में बताया तो उन्होंने कहा कि तुम्हें घर जाना हो तो चले जाओ । मैंने पूछा कि आपकी क्या सम्मति है, मुझे क्या करना चाहिए ? श्रीबाबा ने पूछा कि तुम्हारे कितने भाई हैं, माँ की सेवा करने वाले हैं कि नहीं ? मैंने बताया कि हम चार भाई हैं, मैं सबसे छोटा हूँ । तीन भाई विवाहित हैं, उन्हीं भाइयों के पास माँ रहती हैं, वे उनकी सेवा करते हैं । यह सुनकर बाबा ने अपना उदाहरण देते हुए कहा कि तुम्हारे तो तीन भाई हैं, जो माँ की सेवा करते हैं जबकि मेरे पिताजी की तो बचपन में ही मृत्यु हो चुकी थी और मैं इकलौता पुत्र था, घर छोड़ा तो विधवा माँ अकेली थीं । मैं मान मन्दिर में रह रहा था तो एक दिन मानपुर से भिक्षा माँगकर लाया और रोटी खाने ही जा रहा था कि उसी समय पण्डितजी नीचे से दौड़ते हुए आये और बोले कि आपके घर से टेलीग्राम (तार) आया है, उसमें लिखा है कि आपकी माताजी गिर पड़ी हैं, उनके सिर में चोट लग गयी है, कोई उनकी सेवा करने वाला नहीं है, इसलिए घर आ जाओ । मैंने कहा कि मैं तो अखण्ड ब्रजवास का संकल्प कर चुका हूँ, इसलिए मैं तो ब्रज को छोड़कर कहीं जा नहीं सकता और वैसे भी कोई जीव किसी दूसरे जीव की रक्षा नहीं कर सकता है, रक्षा तो केवल भगवान् ही करते हैं । मैं यहीं से श्रीजी से प्रार्थना करता हूँ कि वे माताजी की रक्षा करें । इस तरह मैं माताजी के पास प्रयाग नहीं गया और तुम्हारे तो तीन भाई हैं, जो माँ की सेवा कर सकते हैं, फिर तुम क्यों चिन्ता करते हो ? श्रीबाबा महाराज के इस प्रकार समझाने पर मैं प्रयाग नहीं गया और यहीं रुक गया ।

दयो राम को लें हम आशा करें न अन्य । लाख खाख सम दैं तजि राखें भक्ति अनन्य ॥

गुरु-पूर्णिमा-महोत्सव २०२४

(श्रीगुरु-महिमान्वित रसिया)

(१) (तर्ज – हरि जननी मैं बालक तोरा ।)

श्रीसद्गुरुवर शरण तिहारी । अपना लेना आस हमारी ॥
जनम-जनम की हूँ मैं भटकी । द्वार तिहारे आयके अटकी ॥
श्रीगुरु-कृपा न जान सकी । मनमानेपन में है अटकी ॥

कृपा-दया-करुणा के आगर । सद्गुरुवर श्रीभक्ति के सागर ॥
धामवास की अनुपम महिमा । ब्रजभूमि रसिकन की गरिमा ॥
श्रीकरुणा नित जहाँ बरसती । सब जन को अभिसिंचित करती ॥
परम है रसमय श्रीआराधन । लालायित रहते ऋषि-मुनिजन ॥
धामनिष्ठ श्रीसंतन्ह-भक्तन । कृपाभिलाषी हूँ मैं छन-छन ॥

(२) तर्ज – नंदलाल प्यारे ! यशुदा दुलारे !!
नैनों के तारे !!! करूँ तिहारी मनुहार ।

सद्गुरु हमारे ! नैनों के तारे !!
ब्रज उजियारे !!! करूँ मैं नमन बार-बार ॥
ब्रज ब्रजवासिन प्राणन प्यारे, रसिकन भक्तन्ह परम दुलारे,
ब्रजरस जीवन, राधा तन-मन, सत्संग वचनन, आराधन आधार ।
अद्भुत ब्रजसेवा वन-कुण्डन, यात्रा गौसेवा संकीर्तन,
नाम सहारे, श्रीप्रभु प्यारे, जग से न्यारे, आनन्द अपरम्पार ।
गाँव गली नगर सब जन-जन, हैं प्रमुदित नित करते सुमिरन,
कृपाश्री बरसी, ब्रजरस सरसी, भक्तिहि बसी, गुरु-दया आगार ।
श्रीमन्दिर महिमा है चमकै, भक्ति-शक्ति-सरिता है झमकै,
ब्रज-आराधन, भाव-जगावन, रस सरसावन, राधाभाव अपार ।
श्रीगुरु-कृपा बरसती प्रतिपल, ऋणी है कण-कण चेतन पल-पल;
श्री शरणागति, आवै मति रति, सच्ची सद्गति, गुरु-करुणा आभार ॥

(३) तर्ज – मैं तो तेरे हाथ बिकानी, ओ जादूगर साँवरिया ।

नित आराधन करते गुरुवर, श्रीगहवरवन डागरिया ।
सच्ची आराधिका बनूँ मैं, गाऊँ ब्रजरस रसिया ॥
छोड़ के आई हूँ गृह-बन्धन, लगन लगी है श्रीगुरु-चरनन,
करती नित सत्संग का चिन्तन, नृत्य-गानमय श्री आराधन,
अपनाओ अब रस सरसाओ, पड़ी हूँ रसिकन नागरिया । नित आराधन..
दुर्लभ है श्री गहवर को रस, त्यागी-तपी रहे हैं तरस,
संगीतमय संकीर्तन सरस, होवैं सुनवै को सब विबस,
सच्चे श्रीगुरुजनन कृपा से, भाव भगति ही मिलिया । नित आराधन.....
अति श्रीकृपा मिले ह्याँ वास, अभिलाषा है सतत् निवास,
राधा रटूँ मैं श्वाँस-श्वाँस, श्रीलीला दर्शन की आस,
सद्गुरु श्री शरणागति होवै, सहज पाप सब नसिया ॥ नित आराधन.....

कैसी ऋतु सामन की आई, जामें झूलन की बहार ||

कोयल कैसी गाती डोलैं
मोरा नाचैं पंखन खोलैं
दादुर और चकोरा बोलैं
पीउ पीउ ये राटैं पपैया झींगुर की झनकार |
इन्द्र–धनुष ऊग्यो रंगीलो
बादर झमक चढ्यो गरबीलो
मन्द–मन्द गरजै बरसीलो
नहनी–नहनी बूंदरिया की ठंडी परै फुहार |
ऐसे बचन कहैं मनमोहन
चलीं छबीली चन्द लजोहन
जाय छिप्यौ बदरी के गोहन
रेशम की डोरन ते झूला पर्‍यो कदम की डार |
झूला नव फूलनहि संवार्‍यो
फूलन सब सिंगारहि धार्‍यो
गोद उठाय प्रिया बैठार्‍यो
दोनूँ झूला गावैं बरसै गहवर रस की धार ||

‘मान मन्दिर’ लीलास्थल श्रीराधाकृष्ण की लीला स्थलियों में सबसे प्रमुख है इस अति विलक्षण लीलास्थली के पुनुरुद्धार कार्य में जुड कर ‘धाम-सेवा’ का दुर्लभ लाभ प्राप्त करें

सेवा राशि देकर रसीद अवश्य प्राप्त करें।
ACCOUNT NUMBER: 59109927338666
IFSC CODE: HDFC0000268
BANK: HDFC BANK LTD
BRANCH: BSA COLLEGE, MATHURA
संपर्क 9927338666
www.maanmandir.org
आपकी सेवा राशि आयकर अधिनियम 80G/12A के अंतर्गत आयकर छूट के लिए मान्य है
रजिस्ट्रेशन नंबर AADTS716DEF2021401

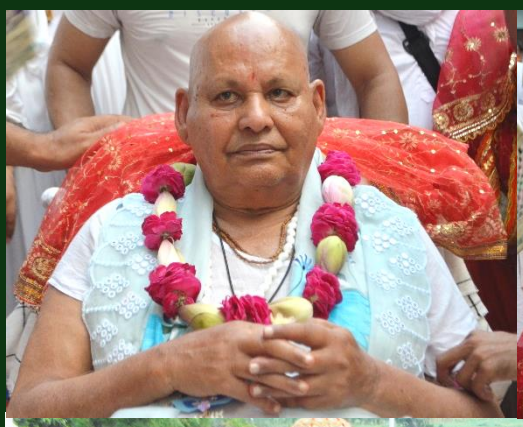

पूज्यश्री बाबा महाराजजी के पावन सानिध्य में
गुरुपूर्णिमा-दिवस पर श्रीधाम बरसाना
(ब्रह्माचल पर्वत,राधारानी) की परिक्रमा
लगाते हुए साधु-संत, भक्तजन एवम्
ब्रजवासीजन

गुरुपूर्णिमा महोत्सव; रसमण्डप में
हुए शास्त्रीय संगीतमय कार्यक्रम

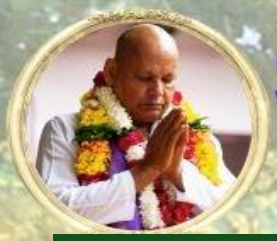

श्री मानमंदिर

प्रस्तावित पुनरुद्धार रेखांकित चित्र

'मान मन्दिर' लीलास्थल श्रीराधाकृष्ण की लीला स्थलियों में सबसे प्रमुख है इस अति विलक्षण लीलास्थली के पुनरुद्धार कार्य में जुड कर 'धाम-सेवा' का दुर्लभ लाभ प्राप्त करें

मान मंदिर लीला स्थल श्रीराधाकृष्ण की लीला स्थलियों में सबसे प्रमुख है
इस अति विलक्षण लीला स्थली के पुनरुद्धार कार्य में जुड़ कर धाम सेवा का दुर्लभ लाभ प्राप्त करें
सेवा राशि देकर रसीद अवश्य प्राप्त करें।

ACCOUNT NUMBER: 59109927338666
IFSC CODE: HDFC0000268
BANK: HDFC BANK LTD
BRANCH: BSA COLLEGE, MATHURA
संपर्क :9927338666
www.maanmandir.org
आपकी सेवा राशि आयकर अधिनियम 80G/12A के अंतर्गत आयकर छूट के लिए मान्य है
रजिस्ट्रेशन नंबर AADTS716DEF2021401

ACCOUNT NAME
SHRI MAAN BIHARI
LAL MANDIR SEVA
ACCOUNT NUMBER: 59109927338666
IFSC CODE: HDFC0000268
BANK: HDFC BANK LTD
BRANCH: BSA COLLEGE, MATHURA

मान मंदिर लीला स्थल श्रीराधाकृष्ण की लीला स्थलियों में सबसे प्रमुख है
इस अति विलक्षण लीला स्थली के पुनरुद्धार कार्य में जुड़ कर धाम सेवा का दुर्लभ लाभ प्राप्त करें

श्रीमानमंदिर सेवा संस्थान ट्रस्ट, गह्वरवन, बरसाना (मथुरा)
www.maanmandir.org; संपर्क :9927338666

QR कोड

RNI REFERENCE NO. 1313397- REGISTRATION NO. UP BIL-2017/72945-TITLE CODE UP BIL-04953 POSTAL REGD.NO. 093/2024-2026 श्री मान मन्दिर सेवा संस्थान के लिए प्रकाशक/मुद्रक एवं संपादक राधाकांत शास्त्री द्वारा गुप्ता ओफ़्सेट प्रिंटर्स A- 125/1 , wazipur industriyal area, new delhi- 52 से मुद्रित एवं मान मन्दिर सेवा संसथान, गह्वरवन, बरसाना, मथुरा (उ.प्र.) से प्रकाशित **[AGRA/WPP-12/2024-2026 AT 31.12.26]**